परमेश्वर का वचन चमत्कारी बीज

परमेश्वर के वचन के माध्यम से उसकी अलौकिक शक्ति की खोज करना

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2024

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – God's Word-The Miracle Seed)

परमेश्वर का वचन चमत्कारी बीज

परमेश्वर के वचन के माध्यम से उसकी अलौकिक शक्ति की खोज करना

विषयसूची

परिचय

1. परमेश्वर का वचनः हमारे विश्वास की नींव 1

2. परमेश्वर का वचनः उसकी शुद्धता और सामर्थ 10

3. परमेश्वर का वचनः चमत्कारी बीज 22

4. बीज परमेश्वर का वचन है 26

5. बीज हृदय में बोया जाना चाहिए 32

6. परमेश्वर के वचन पर मनन करना 38

7. बीज की रक्षा और पोषण किया जाना चाहिए 64

8. प्रकाशनः आत्मिक समझ प्राप्त करना 69

9. फसल को रोकने वालेः वचन का विरोध 74

10. फसल को रोकने वालेः कांटे जो वचन को दबा देते हैं 77

11. तीन कुंजियांः समझना, ग्रहण करना, बनाए रखना 80

12. शब्द के बीज 86

परिचय

हम सभी अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य का अनुभव करना चाहते हैं। हम व्यक्तिगत रूप से और दूसरों के लिए भी परमेश्वर के उद्धार, चंगाई, छुटकारा और आश्चर्यकर्म करने वाली परमेश्वर की सामर्थ की इच्छा रखते हैं। कई बार हम परमेश्वर की सामर्थ के भव्य (प्रभावशाली) प्रदर्शन की आशा रखते हैं, कुछ ऐसा जो हमें "आश्चर्यचकित" करेगा। यदपि, यह सच है कि परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा के सामर्थ द्वारा अपने कार्य को अद्‌त रीतियों से चिन्हों और चमत्कारों के साथ प्रकट करेगा, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर अपने वचन के द्वारा भी कार्य करता है। परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर के वचन के माध्यम से अपनी सामर्थ प्रदान करता है। जबकि हमारे जीवन में परमेश्वर के वचन को पढ़ने, मनन करने और ग्रहण करने की प्रक्रिया विशिष्ट रूप से दिखाई नहीं देती, यह कोई कम अलौकिक नहीं है, क्योंकि इसमें भी परमेश्वर कार्य कर रहा है। कई विश्वासी परमेश्वर के अद्‌त कार्य को खो बैठते हैं, जो परमेश्वर उनके दैनिक के जीवनों में अपने वचन के द्वारा करने की इच्छा रखता है, क्योंकि वे हमेशा प्रभावशाली भव्यता की खोज में रहते हैं।

दूसरी आम समस्या यह है कि कई विश्वासी परमेश्वर के अभिषिक्त स्त्री या पुरुष की ओर देखते हैं कि वे उनके लिए परमेश्वर की सामर्थ को प्रदान करें। परमेश्वर ने सेवकों को अभिषिक्त किया है, जो उसके आत्मा के सामर्थ के द्वारा लोगों की सेवा करते हैं, अंततः, प्रत्येक विश्वासी को उस स्थान में आना चाहिए जहाँ पर वे परमेश्वर के वचन के माध्यम से और उसके आत्मा के द्वारा परमेश्वर की ओर से प्राप्त करना सीखें। यीशु ने हम सभी को निमंत्रित किया है कि हम सीधे उसके पास जाएं, उससे प्राप्त करके खाएं और उसकी ओर से पीएं, ताकि हम में

से प्रत्येक दूसरों को उसके अनुग्रह को देने वाला और उन्हें यीशु के निकट लाने वाला बना सकें, ताकि वे भी उससे पाकर खा और पी सकें। हमें मध्यस्थों पर निर्भर नहीं होना है।

हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने वचन के माध्यम से कार्य करता है। उसने इसी तरह सब कुछ बनाया, अपने वचन के माध्यम से अपनी सामर्थ प्रदान करने के द्वारा। परमेश्वर का वचन परमेश्वर के जीवन और सामर्थ का वाहक है जो हमारे जीवनों के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर सकता है। परमेश्वर ने हमें अपना वचन दिया है और उसके वचन की सामर्थ के द्वारा वह हम में कार्य करने का प्रयास करता है। उसने हम पर प्रकट किया है कि उसके वचन को कैसे प्राप्त किया जाए ताकि उसके वचन में समाहित जीवन और सामर्थ हममें लागू की जा सके ताकि उसका अलौकिक कार्य हम में पूरा हो।

परमेश्वर के वचन में ध्यान या मनन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से वचन हमारे हृदयों में बोया जाता है। परमेश्वर के वचन में ध्यान, कल्पना, और अंगीकार करना सम्मिलित है। हम सीखेंगे कि परमेश्वर के वचन में ध्यान कैसे करें ताकि परमेश्वर के वचन का चमत्कारी बीज आपके जीवन में फल ला सके। यह पुस्तक उन सरल सच्चाइयों को खोलकर रखती है जो उसके वचन, चमत्कारी बीज के माध्यम से हमारे अंदर भेजी गई परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ को ग्रहण करने और अनुभव करने में हमारी सहायता करेगी।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
परमेश्वर का वचनः हमारे विश्वास की नींव

हमारे मसीही जीवन में एक महत्वपूर्ण तत्व है, एवं इतना आवश्यक है कि यह हमारे पूरे मसीही अनुभव की गुणवत्ता को निर्धारित करता है। और यह परमेश्वर का वचन है। हम जिस स्तर की परिपक्वता तक बढ़ते हैं और परमेश्वर में जिस गहराई तक पहुँचते हैं, वह इस बात से निर्धारित होता है कि हम अपने जीवन में उसके वचन को कितना स्थान देते हैं। चाहे हम विजय में चलें या नहीं और जो आशीषें अनुभव करते हैं, उनका परिमाण एक बड़ी मात्रा तक परमेश्वर के वचन के परिमाण से प्रभावित होता है जिसे हम ग्रहण करने में सक्षम हैं और अपने दैनिक जीवन में उसका निरंतर अभ्यास करते हैं।

जबकि, एक ऐसे संसार में जहां "घटना" को महत्व दिया जाता है, जो दिखावे की खोज में होता है, बहुत से लोग "प्राचीन पुस्तक" की सामग्री पर ध्यान देने के लिए तैयार नहीं होते हैं। कोई व्यक्ति धार्मिक पुस्तक से सिर्फ वचनों को पढ़ने में समय क्यों बिताएगा, कुछ लोग दावा करते हैं कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक रूप से अप्रासंगिक हैं? और दुख की बात है कि विश्वासियों के बीच भी, एक "शांत समय" बिताने के दायित्व को पूरा करने के अलावा बहुत से ऐसे नहीं हैं जिन्होंने समझा है, कि लिखित पवित्र वचन के हमारे जीवनों पर क्या परिणाम और प्रभाव हो सकते हैं। यह सच है, कि पहले तो पवित्रशास्त्र निर्जीव लग सकता है, शायद सहज रूप से पढ़ने वाले पाठक के लिए उबाऊ भी। किन्तु जब हम इसकी अंतर्निहित सामर्थ और उस स्थान को समझते हैं, जिसे खुद परमेश्वर ने स्वयं अपने लोगों के जीवन में अपने वचन को दिया है, उनके लिए वचन जीवित है! यह

वचन बल, आराम, आशा, विश्वास, शिक्षा और बुद्धि का स्रोत है। उन्होंने अपना पूरा वर्तमान और भविष्य हमारे विश्वास के आधार पर शास्त्रों में कही गई बातों पर टिका दिया है। जीवन के तूफानों के बीच, हम जानते हैं कि वचन हमें संभालेगा और हमें थामे रहेगा। बीमारी के बीच, हम जानते हैं कि वचन चंगाई और छुटकारा ले लाएगा। चुनौतियों और दबावों के दौरान, हम इस बात पर विश्वास करते हैं कि वचन क्या प्रतिज्ञा करता है। वचन में हम जिन संभावनाओं को देखते हैं उनके कारण हम असंभवनीय बातों पर हंस सकते हैं। उस समय भी जब हम देख नहीं सकते, छू नहीं सकते, सुन नहीं सकते, सूंघ नहीं सकते या स्वाद नहीं चख सकते-फिर भी हम जानते हैं, क्योंकि वचन ने हमें एक मजबूत आश्वासन, और एक दृढ़, अटल विश्वास का दर्शन दिलाया है।

हमारी हार्दिक इच्छा है कि इस पुस्तक को पढ़ने वाला हर व्यक्ति परमेश्वर के साथ चलने में इस आत्मविश्वासपूर्ण आश्वासन को प्राप्त करें। यदि आप पहले से ही वचन में कुछ सीमा तक समझ प्राप्त कर चुके हैं, तो हम चाहते हैं कि आप और भी दृढ़ और प्रोत्साहित हों।

अनंत वचन, देहधारी वचन, लिखित वचन

लूका 24:27

तब उसने मूसा से और सब भविष्यक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया।

परमेश्वर का पुत्र यीशु, अनंत वचन (यूहन्ना 1:1-4), जो देहधारी वचन बन गया (यूहन्ना 1:14), जिसने लिखित वचन, पवित्र शास्त्र के अनुसार जीवन बिताया, प्रचार किया और सिखाया। छोटी उम्र से ही यीशु पवित्र शास्त्र के अध्ययन और शिक्षा में लगा रहा (लूका 2:46)। उसने लिखित वचन (मत्ती 4:1-10) का उपयोग करते हुए परीक्षाओं

का सामना किया। देहधारी वचन को आत्मा द्वारा अभिषिक्त किया गया और वह पवित्रशास्त्र को पूरा करने के लिए इस तरह चला। (लूका 4:21; मरकुस 14:49; लूका 24:44)। क्या यह ऐसा अद्त विचार नहीं है, कि परमेश्वर जो देहधारी हुआ, उसने लिखित वचन को ऐसे सम्मान के साथ संभाला। हमें और कितना करना चाहिए?

उपदेश की मूर्खता के द्वारा

1 कुरिन्थियों 1:21

क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे।

परमेश्वर ने अपनी बुद्धि से यह निश्चित किया है कि मनुष्य के जीवन का अनंत भविष्य सुसमाचार के संदेश के सरल प्रचार से तय हो। इस पर विचार करें! परमेश्वर ने मसीह का सुसमाचार, जो कि सब मनुष्यों के *"उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ है"* (रोमियों 1:16), उसे सुनाने के लिए स्वर्गदूतों की सेना को नहीं चुना। बजाए इसके की, उपदेश देने के लगभग "मूर्खतापूर्ण" अभ्यास के माध्यम से, जिसे उसने नश्वर, त्रुटिपूर्ण पात्रों के माध्यम से करने के लिए नियुक्त किया था, उसने खोए हुए लोगों को जीतने का विकल्प चुना है। अतः प्रचार करना या सुसमाचार सुनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसा कि पौलुस ने समझाया, कुछ लोग संदेश को और उसके प्रचार को मूर्खता समझ सकते हैं। किन्तु जिन्हें बुलाया गया है, उनके लिए संदेश और उसका प्रचार मसीह को प्रकट करता है जो कि परमेश्वर की सामर्थ और बुद्धि है (1 कुरिन्थियों 1:24)। इसी प्रकार, परमेश्वर ने यह निश्चित किया कि लिखित वचन वह साधन बने जिसके द्वारा परमेश्वर की सामर्थ और बुद्धि हमारे जीवनों में लाई जाती है। यह एक रहस्य की बात लगती है कि जिस पुस्तक को हम "बाइबल" कहते हैं, उसके पन्नों पर अंकित शब्दों के माध्यम से हमारे जीवन में दिव्य शक्ति और ज्ञान का संचार

होता है। साधारण शब्द, वे शब्द जिनका उपयोग हम अपने प्रतिदिन के जीवन में करते हैं, अचानक ईश्वरीय मूल्य धारण करते हैं, सिर्फ इसलिए कि उन्हें बाइबल में मुद्रित किया गया है? ये शब्द या वचन अपने आप में सामान्य हैं, परंतु जो सत्य वे प्रस्तुत करते हैं वह ईश्वरीय हैं। इन शब्दों का एक साथ संयोजन करने वाला मनुष्य था, किन्तु प्रस्तुत किए जाने वाले सत्य को प्रेरित करने वाला परमेश्वर था। पवित्र शास्त्र के वचनों के द्वारा बताए गए सत्य को समझने और स्वीकार करने के द्वारा, हम परमेश्वर की बुद्धि और सामर्थ में प्रवेश करते हैं और उसे अनुभव करते हैं।

ये सभी वचन परमेश्वर द्वारा प्रेरित हैं

2 तीमुथियुस 3:15,16
15 और बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है।
16 हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है।

जब प्रेरित पौलुस ने "पवित्र शास्त्र" का उल्लेख किया, तब वह लिखित वचनों के बारे में बोल रहा था। जब वह कहता है, कि *"हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है"* (2 तीमुथियुस 3:16)| वह लिखित वचन को ईश्वरीय अधिकार के साथ जोड़ता है। हालांकि मनुष्य ने शब्दों को लिखा, परमेश्वर उस संदेश का स्रोत और प्रेरणा था। प्रेरित पतरस इसे थोड़े भिन्न तरीके से लिखते हुए कहता है *"परंतु पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, परंतु भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे"* (2 पतरस 1:20,21)। संपूर्ण पवित्र शास्त्र इस अर्थ से भविष्यात्मक है कि उनका जन्म परमेश्वर की आत्मा की प्रेरणा से हुआ है। लिखित वचन परमेश्वर

द्वारा प्रेरित हैं। इस तथ्य को अपने अस्तित्व के मूल में विश्वास करने से वचन के बारे में आपका दृष्टिकोण पूरी तरह से बदल सकता है। यदि आप सचमुच विश्वास करते हैं कि सभी वचन परमेश्वर द्वारा प्रेरित हैं, तो आप अपने जीवन में वचन को उच्च प्राथमिकता देंगे। आप यह जानते हुए अपनी बाइबल खोलेंगे कि इस सृष्टि का परमेश्वर अपने विचारों को आप तक पहुँचा रहा है। उसने पृथ्वी पर हमारे जीवन के लिए जो आवश्यक और पर्याप्त माना है, उसे चुना है और उसे पुस्तक के पन्नों में रखा है। वचन शिक्षण (सिद्धांत), प्रतीति, सुधार (डाँट), और निर्देश प्रदान करते हैं।

पवित्र शास्त्र—परमेश्वर में हमारी खिड़की

भजन संहिता 119:18
मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूं।

पवित्र शास्त्र के वचन हमें जीवित परमेश्वर के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। वे परमेश्वर के स्वभाव, चरित्र, विशेषताओं और हृदय को प्रकट करते हैं। पवित्र शास्त्र के पन्नों में, हम यह पता लगाते हैं कि परमेश्वर कौन है, वह क्या करता है, उसकी भावनाएं और उसकी इच्छाएं क्या हैं। फलस्वरूप, पवित्र शास्त्र के माध्यम से हम परमेश्वर को जानते हैं और इसके द्वारा उसके साथ एक व्यक्तिगत रिश्ता बनाते हैं। रिश्ता ज्ञान पर आधारित होता है। जहां व्यक्तिगत ज्ञान नहीं है, वहां कोई संबंध नहीं हो सकता। इसके अलावा, प्राप्त किए गए ज्ञान या घनिष्ठता की गहराई संबंध की गहराई को निर्धारित करती है। इसलिए, जीवित परमेश्वर के साथ एक गहरा और करीबी रिश्ता रखने के लिए, उसे उसी तरह निकटता से जानना होगा, जैसा कि उसे पवित्र शास्त्र में प्रकट किया गया है। बाइबल के पन्नों को खोलना रोमांचक है क्योंकि वे परमेश्वर को प्रगट करने हेतु हमारी खिड़की हैं। जब हमारी आंखें वचनों के "पीछे" देखने के लिए खोली जाती हैं, तो हम अपने परमेश्वर की महिमा और प्रताप की समझ प्राप्त करते हैं। किसी अन्य

बात पर परमेश्वर की हमारी समझ को आधारित करने के लिए हमारे अनुभव, दूसरों की राय आदि सदैव सटीक नहीं हो सकते हैं। यह सच है कि परमेश्वर खुद को अन्य स्थानों में भी प्रकट करता है, उदाहरण के लिए, उसकी रचना में। हालांकि, जो भी जानकारी हम अन्य स्रोतों से प्राप्त कर सकते हैं, उसे पहले लिखित शास्त्र के प्रकाश में जांचना चाहिए।

पवित्र शास्त्र–हमारा मानक, हमारा प्रतिमान

भजन संहिता 119:133

मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर स्थिर कर, और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे।

ऐसे संसार में जहां लोगों के पास सही और गलत के लिए निश्चित मानक नहीं है, हम परमेश्वर के वचन को अपना मानक बनाने के लिए चुनते हैं। जीवन के सभी मामलों के बारे में पवित्र शास्त्र जो कहता है, उसे हम सत्य मानते हैं। परमेश्वर का वचन जो कहता है कि वह सही और उत्तम है, उसे हम सही और उत्तम मानते हैं। वचन जो कहता है कि वह गलत है, तो हम उसे गलत मानते हैं। हम पवित्र शास्त्र के द्वारा निर्धारित नैतिक मानकों को दूर करके उन्हें "बुद्धिसंगत" (तर्क), "उदारीकृत" (उदार बनाने का प्रयास), या "प्रासंगिक" (सांस्कृतिक रूप से या सामाजिक रूप से प्रासंगिक) नहीं बनाते हैं। हम पवित्र शास्त्र में जो कुछ निर्धारित किया गया है, उससे कुछ भी कम में सन्तुष्ट न होने का चुनाव करते हैं।

परमेश्वर का वचन हमारा मार्गदर्शक है। हम पवित्र शास्त्र के निर्देशों के अनुसार अपने जीवन को ढालते हैं। पवित्र शास्त्र में पति, पत्नी, माता-पिता, बच्चे, नियोक्ता, कर्मचारी, सेवकों के लिए और सामान्य रूप से सभी विश्वासियों के लिए व्यवहार के स्तरों को निर्धारित किया गया है। हम पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ, हमारे आचरण,

हमारी जीवन शैली, हमारे मूल्यों, हमारे विश्वास, हमारे लक्ष्यों और आकांक्षाओं को पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार पूरा करने का प्रयास करते हैं। हम अपने पूरे जीवन को उसके वचन द्वारा चलाते हैं।

पवित्र शास्त्र–हमारा अधिकार

भजन संहिता 119:101
मैंने अपने पांवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है, जिससे मैं तेरे वचन के अनुसार चलूं।

हम अपने जीवन में अंतिम अधिकार के रूप में पवित्र शास्त्र को प्रस्तुत करते हैं। भले ही कोई मानव निर्मित संरचना या कानून हमें सुधार नहीं सकता, हम वचन के सुधार के लिए अपने आप को प्रस्तुत करते हैं। हम अपनी त्रुटियों को इंगित करने के लिए किसी और की प्रतीक्षा नहीं करते, यदपि यह कई बार आवश्यक हो सकता है। यदि हम अपने आप को ऐसी चीजें करते हुए पाते हैं जो वचन कहता है कि गलत हैं, तो हम बदलाव करने को तैयार होते हैं ताकि हम वचन का पालन कर सकें। हम अपने जीवन में अनुशासन का पालन करने का चुनाव करते हैं ताकि हम वचन के अनुरूप चल सकें। परमेश्वर के वचन के अधीन होना वास्तव में अपने आप को खुद परमेश्वर के अधीन करना है। पवित्र शास्त्र की सलाह के खिलाफ विद्रोह करना परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करना है। प्रभु यीशु ने कहा, *"जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा"* (यूहन्ना 12:48)। परमेश्वर का वचन वह कानून होगा जिसके अनुसार सभी मनुष्यों का न्याय किया जाएगा।

परमेश्वर के लोगों के लिए यह समय है कि वे परमेश्वर के लिखित वचन के लिए आदरयुक्त भय उत्पन्न करें। हम अपने जीवन में उसके वचन के अधिकार के अधीन न होते हुए परमेश्वर के अनुयायी नहीं हो

सकते। हम “दृढ़ विश्वासी” नहीं हो सकते, जबकि हम वही करते हैं जो पवित्र शास्त्र के विपरीत है, सिर्फ इसलिए कि ये चीजें हमारे शरीर के लिए सुखद या हमारे तर्क के लिए स्वीकृत हो सकती हैं। विश्वासियों के रूप में, हमें अपनी भावनाओं और तर्क को वचन की अधीनता में लाना सीखना चाहिए। हम हर बुराई से बचते हैं और अपने आप को उसके वचन के साथ जोड़ते हैं क्योंकि यह अंतिम अधिकार है।

वचन को आपमें प्रचुरता से वास करने दें

कुलुस्सियों 3:16

मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।

परमेश्वर का वचन हमारे विश्वास की नींव है। यह आत्मिक विकास और परिपक्वता के लिए आवश्यक सामग्री है। हमें मसीह में बने रहना है और उसका वचन हममें बना रहे (यूहन्ना 15:7)। आपके लिए हमारी आज्ञा यह है कि मसीह के वचन को अपने आप में प्रचुरता से बसने दो। पवित्र शास्त्र की खोज, अध्ययन और मनन में अधिक समय बिताएं। पविआपने जो सीखा है, उसका बार-बार पुनरावलोकन करें। पवित्र आत्मा से अंतर्दृष्टि और प्रकाश मांगें। अपने हृदय में प्रकाश के ज्ञान का एक समृद्ध भंडार एकत्रित होने दें। आपने जो सीखा है, उसका बार-बार पुनरावलोकन करके स्वयं को बार-बार उन आत्मिक सच्चाइयों की याद करवाइए जिसे परमेश्वर की आत्मा ने आपको समझाया है। व्यक्तिगत भजन और परमेश्वर के गीत गाने के लिए वचन का उपयोग करें। वचन में अन्य विश्वासियों को सिखाएं और प्रोत्साहित करें। प्रकाशन के सारे ज्ञान जो आपको प्रदान किया गया है, उसमें चलें। आप इस प्रकारएक ठोस बुनियाद स्थापित करेंगे, जिस पर आप अपने मसीही अनुभव का निर्माण कर सकते हैं।

जो व्यक्ति प्रभु के अनुसार वचन को सुनता है और उसका पालन करता है, वह एक बुद्धिमान व्यक्ति की तरह है, जिसने चट्टान पर अपना घर बनाया (मत्ती 7:24,25)।

आप किस तरह की नींव पर अपने जीवन का निर्माण कर रहे हैं?

2
परमेश्वर का वचनः उसकी शुद्धता और सामर्थ

मैं मणिपाल, भारत में कॉलेज के चार रोमांचक वर्षों के अंत में था। कई अद्‌त बातें हुई थीं। सबसे महत्वपूर्ण यह था कि परमेश्वर ने हममें से कुछ युवाओं जो कि सामान्य कॉलेज के छात्र थे—मिलकर एक साथ कार्य करने और ऐसी नींव रखने में सक्षम बनाया जो अंततः छात्र समुदाय के बीच एक मजबूत मसीही संगति के रूप में विकसित हुई। यह शैक्षणिक वर्ष का अंत था, और मेरे कई दोस्त घर के लिए रवाना हो चुके थे। यह जानते हुए कि इस समय होस्टल के कमरे असामान्य रूप से शांत होंगे, मैंने कुछ दिनों के लिए बस प्रभु के साथ कुछ समय बिताने का फैसला किया था। मैं विशेष रूप से अपने भविष्य के बारे में और उन बातों के बारे में प्रार्थना करना चाहता था जो मेरे सामने थीं, जो कि अज्ञात थी। प्रार्थना के इस समय के दौरान यशायाह 45:1-3 से मेरी आत्मा बहुत प्रभावित हुई थी। मेरे लिए, ये आधारशिला के वचन बन गए, ये वचन हृदय में एक विशेष स्थान रखते हैं। मैंने उनके अर्थ को समझा और किस प्रकार से वे मेरे जीवन में लागू होंगे।

इस वादे के एक भाग के रूप में, प्रभु ने कहा कि वह हमारे आगे चलेगा और हमारे लिए दरवाज़े खोलेगा, और ये दरवाज़े बंद नहीं होंगे। तब से, ऐसे कई अवसर आए हैं जब मैंने असंभावनाओं और बंद दरवाज़ों का आमना-सामना किया है। चाहे वह विश्वविद्यालयों में प्रवेश हो और वित्तीय सहायता प्राप्त करना हो या देशों में वीज़ा या व्यक्तिगत वित्तीय संकट के बाद उठना, और अन्य कई स्थितियों में, मैं इन वचनों

पर लौटा हूं और परमेश्वर के सामने खड़ा हूं, यह स्वीकार करते हुए कि उसने जो वायदा किया था, उसे वह पूरा भी करेगा। मैंने पवित्र शास्त्र के इन वचनों को लिया है और मसीह में हमें दिए गए अधिकार के द्वारा, उन्हें परिस्थितियों और स्थितियों पर लागू किया है, और उन्हें बदलते हुए देखा है। मैंने इन वचनों की पवित्रता और सामर्थ पर इस हद तक भरोसा किया है जो तर्कसंगत बुद्धि के लिए अनुचित लग सकता है, शायद मूर्खता भी। और मैं खुशी-खुशी गवाही देता हूं कि परमेश्वर का वचन कभी विफल नहीं हुआ! इसी तरह, दुनिया भर में कई ऐसे लोग हैं जो चुनौतियों का सामना करने के बाद कई गवाहियां दे सकते हैं और बता सकते हैं कि उन्होंने कैसे परमेश्वर के अचूक वचन पर पूरी तरह से भरोसा किया और कैसे परमेश्वर ने अपने वचन की सामर्थ से, उन्हें जयवंत किया!

एक स्थान है जहां हम आ सकते हैं—एक ऐसा स्थान जहां हम परमेश्वर के अनमोल वचन से प्रेम कर सकते हैं और उसका सम्मान कर सकते हैं; और एक ऐसा स्थान जहां हमारे हृदय परमेश्वर के वचन की अखंडता और सामर्थ में एक निर्विवाद विश्वास के साथ स्थिर हैं; एक ऐसा स्थान जहां हम उसके वचन को किसी और चीज़ से बढ़कर आदर देते हैं; एक ऐसा स्थान जहां वचन हमारे चरित्र को परिवर्तित कर देते है, हमारी सोच को प्रभावित करते है और हमारे कार्यों को निर्देशित करते हैं; एक ऐसी जगह जहां हमारा हृदय आत्मिक समझ को चाहता है और उसके लिए भूखा रहता है जो वचन के माध्यम से आती है; एक ऐसा स्थान जहां हम पवित्र शास्त्र में प्रकट उसकी महिमा को देखना चाहते हैं; परमेश्वर के वचन में शुद्ध आनंद का स्थान।

हमारी प्रार्थना है कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति इस स्थान पर निरंतर बने रहने का आनंद अनुभव करेगा।

परमेश्वर का संप्रभुतापूर्ण हाथ

रोमियों 11:33

आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!"

परमेश्वर के मार्ग समझ से "परे" हैं या मानवीय समझ से परे हैं। परमेश्वर का संप्रभुता पूर्ण हाथ मानव इतिहास के पाठ्यक्रम के माध्यम से अपना रास्ता बनाता रहा है, प्रायः ऐसी रीतियों से जो महत्वहीन और अस्पष्ट लगता है। प्रायः परमेश्वर का कार्य बहुत ही साधारण, बहुत ही सामान्य और सांसारिक प्रतीत होता है, और फिर भी वह भव्य आश्चर्यकर्मों के काम से कम नहीं हैं। जब मूसा ने अपनी छड़ी से उस पर प्रहार किया, तब जिस परमेश्वर ने एक पल में चट्टान से पानी निकाला, उसी परमेश्वर ने बसालेल और उसके सहयोगियों के द्वारा भी काम किया जिन्होंने जंगल में निवास के तम्बू को बनाने के लिए प्रतिदिन परिश्रम किया (निर्गमन 31:1-11)। मानव बुद्धि के लिए यह स्वीकार करना मुश्किल होता है कि बसालेल और उसके कारीगरों के समूहों द्वारा किया परिश्रम और कठिन काम स्वयं परमेश्वर द्वारा किया गया काम था। फिर भी परमेश्वर का आत्मा था जिसने इन कारीगरों को निवास के तम्बू के लिए सोने, चाँदी, पीतल में कलात्मक काम करने की बुद्धि, समझ और ज्ञान से परिपूर्ण किया था।

इस सरल चित्रण के विस्तार से, हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि परमेश्वर सामान्य लोगों के जीवन के माध्यम से अपने दिव्य उद्देश्यों को पूरा कर रहा है। अतः यह बात मसीही बाइबल की 66 पुस्तकों के संकलन के साथ थी। परमेश्वर का संप्रभुतापूर्ण हाथ, पवित्र शास्त्र की पुस्तकों का संयोजन करने और कैननाइज़ेशन (संती करण) बनाने की प्रक्रिया में भी काम करता था। मनुष्य का हृदय इस तरह के दावे की वैधता पर प्रश्न खड़ा कर सकता है। लेकिन हममें से जो समझते

हैं कि जब मनुष्य अपने दैनिक काम में लगा रहता है परमेश्वर अपना कार्य शांतिपूर्ण रूप से करता है, यह एक स्थायी रूप से सुलझा हुआ सत्य है!

उसके नाम से भी ऊपर

भजन संहिता 138:2

मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा, और तेरी करूणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम को धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तू ने अपने वचन को अपने बड़े नाम से अधिक महत्व दिया है।

परमेश्वर ने अपने वचन को अपने नाम से भी महान महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उसने अपने वचन को अपने नाम से भी ऊपर रखा है। परमेश्वर के लिए, उसका वचन, जो उसने कहा, उसकी प्रतिष्ठा की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि उसका नाम, उसकी प्रतिष्ठा उसके वचन के समान ही है! हमें इसकी समझ प्राप्त करने की आवश्यकता है। उसकी प्रतिष्ठा उसके वचन पर निर्भर करती है। उसका नाम उसके वचन से महिमा और आदर पाता है। इसके दो महत्वपूर्ण आशय (तात्पर्य) हैं। सबसे पहले, परमेश्वर की ओर से, क्योंकि उसने अपने वचन को अपने नाम से अधिक महिमा दी है, वह जो कुछ है उससे अपने वचन को संभालेगा।

इसके दो महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं।

1) परमेश्वर का भाग

परमेश्वर के वचन स्वयं परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता, सर्वतव्यापकता और सर्वज्ञता परमेश्वर के वचन का समर्थन करती है। उसने कहा *"मैं जागृत और सचेत हूँ, मैं अपने वचन को पूरा करने के लिये जागृत हूँ"* (यिर्मयाह 1:12 द एम्प्लीफाइड बाइबल)।

2) हमारा भाग

दूसरी बात, हमारी ओर से, हमें न केवल प्रभु के नाम को जानने का महत्व समझना है, बल्कि हमें उसके वचन को भी जानना है। हमने उसके नाम को पुकारा है और हम बचाए गए हैं (रोमियों 10:13)। अब हमें उसके वचन को जानते रहने की आवश्यकता है क्योंकि खुद परमेश्वर ने अपने वचन को अपने नाम से अधिक महिमा दी है।

परमेश्वर का वचन उसके चरित्र के समान ही मज़बूत है

इब्रानियों 6:11-18

11 पर हम बहुत चाहते हैं कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिये ऐसा ही प्रयत्न करता रहे।
12 ताकि तुम आलसी न हो जाओ, वरन् उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।
13 परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा करते समय जब शपथ खाने के लिये किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा,
14 मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दूँगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊँगा।
15 और इस रीति से उसने धीरज धरकर प्रतिज्ञा की हुई बात प्राप्त की।
16 मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं, और उनके हर एक विवाद का फैसला शपथ से पक्का होता है।
17 इसलिये जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रगट करना चाहा कि उसका उद्देश्य बदल नहीं सकता, तो शपथ को बीच में लाया।
18 ताकि दो बे–बदल बातों के द्वारा, जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है, दृढ़ता से हमारा ढाढ़स बंध जाए, जो शरण लेने को इसलिये दौड़े हैं कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें।

जब परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया, तब उसने अपनी शपथ लेकर अपने वायदे का समर्थन किया। उसने कहा, *"मैं तुझे आशीष दूंगा,"* और *"मैं तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊंगा।"* (इब्रानियों 6:14)| परमेश्वर ने अब्राहम को *"दो अटल बातें दीं"* (इब्रानियों 6:18) उसके वायदे (उसका वचन) और उसके वायदे का समर्थन करने

के लिए उसकी शपथ (प्रतिज्ञा)। परमेश्वर जब भी कहता है कि, "मैं करूँगा ..." तब वह हमें अपनी दो अटल बातें देता है—उसका वायदा (उसका वचन) और उसकी शपथ (वाचा, प्रतिज्ञा)। परमेश्वर का प्रत्येक वचन (वायदा) प्रतिज्ञा और शपथ के साथ दिया गया है। *"अपनी ही शपथ खाकर"* (इब्रानियों 6:13) पुष्टि या दृढ़िकरण स्वयं उसी पर आधारित है। स्वयं उसके अपने जैसा दूसरा कुछ भी अटल नहीं है क्योंकि वह ऐसा परमेश्वर है जिसका चरित्र नहीं बदलता। उसने कहा, *"क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं"* (मलाकी 3:6अ)। इसलिए, परमेश्वर के प्रत्येक वचन के पीछे परमेश्वर का न बदलने वाला वचन है। और परमेश्वर का एक आवश्यक पहलू यह है कि परमेश्वर का झूठ बोलना असंभव है।

वह *"झूठ बोल नहीं सकता"* (तीतुस 1:2अ)। उसका प्रत्येक वचन जो वह बोलता है, सत्य है। जैसा कि यीशु ने कहा, *"तेरा वचन सत्य है"* (यूहन्ना 17:17ब)। हमें ऐसे स्थान में आने की आवश्यकता है जहां हम परमेश्वर के न बदलने वाले चरित्र के इस पहलू पर निर्भर रहते हैं। हम जानते हैं कि वह कभी झूठ नहीं बोल सकता और इसलिए उसके द्वारा कहा गया प्रत्येक वचन पूर्ण सत्य है। *"ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले, और न वह आदमी है, कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?"* (गिनती 23:19) । जब हम इस बात के प्रति आश्वस्त हो जाते हैं, तब जैसा कि पवित्र शास्त्र कहता है, हमारे पास "साफ रीति से प्रकट"; *"दृढ़ सांत्वना"* है या जैसा एम्प्लीफाईड बाइबल में लिखा है, *"ताकि दो बे-बदल बातों के द्वारा जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है, हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है, प्राप्त करें"* (इब्रानियों 6:18) ।

शुद्ध वचन

भजन संहिता 12:6
परमेश्वर का वचन पवित्र हैं, उस चाँदी के समान जो भट्टी में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार निर्मल की गई हो।

हमारा परमेश्वर सत्य का परमेश्वर है। उसके वचन सच्चे वचन हैं, पवित्र वचन हैं। परमेश्वर का वचन बिना किसी त्रुटि के है। *"तेरा सारा वचन सत्य ही है"* (भजन संहिता 119:160अ)। *"जितनी भलाई की बातें उसने ... कही थी, उनमें से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही"* (1 राजा 8:56आ)। उस पर मज़बूत आत्मविश्वास के साथ भरोसा किया जा सकता है। उसके वायदों को स्पष्टता के साथ माना जा सकता है, उसके निर्देशों को पूरे हृदय से ग्रहण किया जा सकता है। परमेश्वर का वचन स्वर्ग में हमेशा के लिए स्थिर है (भजन संहिता 119:89)। उन्हें बदला या परिवर्तित किया नहीं जाएगा, क्योंकि वह अपनी वाचा को कभी नहीं तोड़ेगा या जो उसने बोला है उससे मुकरेगा नहीं (भजन संहिता 89:34)। उसका वचन हमेशा के लिए बना रहता है (1 पतरस 1:23)। उसका वचन मज़बूत सुरक्षा का स्थान है क्योंकि दूसरा कुछ भी पवित्र, सुनिश्चित और स्थायी नहीं है।

परमेश्वर का वचन परमेश्वर की सामर्थ का वाहक है

इब्रानियों 11:3
विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।

इब्रानियों 1:3अ
वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा।

इब्रानियों 4:12
क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, आर पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।

बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर ने बोलकर इस विश्व को अस्तित्व में लाया। यह मानने से कि "बिग बैंग" और अन्य सिद्धांतों के दावों के प्रस्तावकों के रूप में, बातें समय के साथ-साथ घटती हैं, यह विश्वास करना ज़्यादा उचित है। हम समझते हैं कि *"सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है"* (इब्रानियों 11:3)। इस विश्व का निर्माण, उत्पत्ति, आकार, और रचना उन वचनों के द्वारा की गई जो परमेश्वर ने कहे थे। *"यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो"* (इब्रानियों 11:3)। अर्थात, दृश्य उन चीजों से बना है जो अदृश्य हैं। प्राकृतिक आत्मिक से निकल आया है। यह एक सामर्थ्यशाली सत्य है, जिसे हमें समझ लेना चाहिए। परमेश्वर का वचन अदृश्य, आत्मिक सामग्री थी जिसने दृश्यमान प्राकृतिक जगत को अस्तित्व में लाया। परमेश्वर द्वारा कहे गए वचन के द्वारा न केवल सभी वस्तुएं बनाई गईं, बल्कि इब्रानियों 1:3 के अनुसार सभी बातें वचन के द्वारा ही संभाली गई हैं। संपूर्ण विश्व परमेश्वर के वचन के द्वारा संभाला हुआ, विनियमित और क्रमबद्ध है।

हम इस सच्चाई को समझते हैं, जब हम पहचानते हैं कि परमेश्वर का वचन परमेश्वर की सामर्थ से भरपूर है। भौतिकी में, प्रकाश की प्रकृति के सिद्धांतों में से एक यह बताता है कि प्रकाश में फोटोन होते हैं। फोटोन ऊर्जा-पैकेट हैं। जब ये फोटोन उपयुक्त लक्ष्य से टकराते हैं, तो वे अपनी कुछ ऊर्जा छोड़ते हैं। इसी तरह, हम अपने हृदय में कल्पना कर सकते हैं कि परमेश्वर के वचन, ऊर्जा-पैकेट के रूप में, अपने में सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सर्वशक्तिमान सामर्थ को रखते

हैं। परमेश्वर का वचन इस परमेश्वरीय ऊर्जा को जारी करता है और परमेश्वर के रचनात्मक कार्यों का कारण बनता है।

यदि परमेश्वर ने इस पूरे विश्व को अपने वचन की सामर्थ के द्वारा अस्तित्व में लाया है, तो क्या वह हमारे जीवन में उन बातों को जो वर्तमान में मौजूद नहीं हैं, अस्तित्व में नहीं लाएगा? जहां बीमारी है, परमेश्वर चंगाई और स्वास्थ्य को अपने वचन की सामर्थ से अस्तित्व में ला सकता है। जहां आवश्यकता है, वहां अपने वचन की सामर्थ से, परमेश्वर प्रावधान और आपूर्ति को अस्तित्व में ला सकता है। परमेश्वर की रचनात्मक सामर्थ उसके वचन में वास करती है। इसलिए, परमेश्वर का वचन उन चीजों को बना सकता है (अस्तित्व में ला सकता है) जिनका वायदा परमेश्वर ने किया है, भले ही वे वर्तमान में हमारे जीवन में मौजूद न हों।

परमेश्वर ने इस विश्व को बनाने, रचने और आकार देने के लिए अपने वचन का इस्तेमाल किया। क्या परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमारे वर्तमान और भविष्य को आकार देकर उसका निर्माण नहीं कर सकता? हमारे वर्तमान को बदलने और हमारे भविष्य को आकार देने के लिए परमेश्वर के वचन में सामर्थ है।

यह संपूर्ण विश्व परमेश्वर के वचन द्वारा संभला हुआ, सुरक्षित और विनियमित है। क्या परमेश्वर का वचन हमारे जीवन को संभाले रखने, बनाए रखने और विनियमित करने का काम नहीं कर सकता है? परमेश्वर के वचन में पृथ्वी पर हमारे जीवन से संबंधित बातों को बनाए रखने, विनियमित करने और क्रम में रखने के लिए पर्याप्त और अधिक सामर्थ है।

वायदों पर स्थिर रहना

रोमियों 4:18 (एएमपीसी)

उसने (अब्राहम के लिए, मानव बुद्धि के लिए) निराशा में भी आशा रखकर विश्‍वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का पिता हो।

वचन की पवित्रता और सामर्थ को समझने से हमें उस पर विश्वास करने हेतु दृढ़ विश्वास मिलता है। परमेश्वर का वचन सत्य है और इसलिए हम उम्मीद कर सकते हैं कि वचन में जो वायदा किया गया है वह हमें मिलेगा। परमेश्वर का वचन सामर्थ से भरपूर है और इसलिए हम आश्वस्त रह सकते हैं कि उसका वचन हमारे जीवन में फल लाएगा। भले ही इसका मतलब यह है कि अब्राहम की तरह, आशा के सभी कारणों के खिलाफ, हम अब भी विश्वास में आशा करते हैं कि हम वह सब बन जाएंगे जो परमेश्वर ने कहा था कि हम बन जाएंगे। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हमने परमेश्वर के वचन की पवित्रता और सामर्थ को समझा है। हम जानते हैं कि उसका वचन विफल नहीं हो सकता।

हम में से कुछ तो आर्थिक रूप से कठिन समय का सामना कर रहे होंगे। हमें आश्चर्य है कि जब हमारी दैनिक आवश्यकताओं की बात आती है तो चीजें कभी बदलेगी या नहीं। परमेश्वर ने वायदा किया है कि हमारी सभी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाएगा। हम जानते हैं कि उसने वायदा किया है कि वह *"अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा"* (फिलिप्पियों 4:19)। हम जानते हैं कि जैसे हम *"पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करते हैं,"* (मत्ती 6:33)। पृथ्वी पर हमारे जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें हमें दी जाएगी। हम जानते हैं कि हमारे पास जो कुछ है उससे जब हम

परमेश्वर का आदर करते हैं, तब वह हमें बढ़ौतरी देगा (नीतिवचन 3:9,10; मलाकी 3:9-11)। यह जानते हुए कि इन वायदों में से प्रत्येक वायदा पवित्र और परमेश्वर की सामर्थ से भरपूर है, हम उन्हें विश्वास में थामे रहते हैं। हम जानते हैं कि इन वचनों (वायदों) में पर्याप्त सामर्थ है जिससे वित्तीय आशीषों के रचनात्मक चमत्कार हमारे जीवन में जारी हो सकते हैं और हमारी परिस्थितियों को बदल सकते हैं। हम उनके वायदों पर कायम हैं।

और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है। कुछ अपने भविष्य के लिए परमेश्वर की ओर देख रहे होंगे। यहां तक कि जब चीजें अस्पष्ट, अनिश्चित, शायद निराशाजनक और धूमिल भी लगती हैं, तो परमेश्वर का वचन हमारे जीवन में विश्वास और आश्वासन लाता है। वचन कहता है, *"परमेश्वर से प्रेम करने वालों के लिए सारी बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं"* (रोमियों 8:28)। परमेश्वर ने हमारे लिए जो योजनाएं बनाई हैं, उन्हें वह जानता है, बड़ी समृद्धि की योजनाएं, और भविष्य की उन योजनाओं को लाने की जिनकी हम आशा कर रहे हैं (यिर्मयाह 29:11)। हमारा मार्ग चमकते प्रकाश की तरह है जो उज्जवल और अधिक प्रकाशमान होता है (नीतिवचन 4:18)। इसलिए, हम उम्मीद करते हैं कि चीजें स्पष्ट हो जाएं। हम जानते हैं कि हमारी गति प्रभु द्वारा निर्धारित की गई है (भजन संहिता 37:23,24)। ये और कई अन्य वचन हमें अदम्य साहस और आत्मविश्वास से भर देते हैं। हम उनके वायदों पर कायम हैं।

इसी तरह, हमारे जीवनों के विभिन्न क्षेत्रों के लिए, हम प्रभु के वयादों और आज्ञाओं को पहचानते हैं। हम स्वीकार करते हैं कि उसका वचन, हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों से संबंधित है, पवित्र और सामर्थ से भरपूर है।

उस असीमित सामर्थ को जो वचन में है और उसके हमारे जीवन में जारी होने की संभावना को समझने के बाद, हमें अपने जीवन में परमेश्वर के वचन की सामर्थ का अनुभव करने के लिए क्या करना चाहिए? वह क्या है जो विश्वासी के जीवन में परमेश्वर के वचन में निहित सामर्थ को लागू करता है? हम निम्नलिखित अध्यायों में इन पर विचार करेंगे।

3
परमेश्वर का वचनः चमत्कारी बीज

प्रभु यीशु प्रायः दृष्टान्तों का उपयोग के द्वारा सिखाते थे। दृष्टांत हमारे संसार की कथाएं या उदाहरण हैं जो हमें परमेश्वर के राज्य के बारे में सच्चाई को समझने मे सहायता करते हैं। दृष्टांत हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर का राज्य कैसे कार्य करता है।

उन दृष्टांतों में से एक जिससे हम में से बहुत से लोग परिचित हैं, बोने वाले का दृष्टांत है, जो हमारे लिए तीनों सुसमाचारों (मत्ती 13:1-9, 18-23; मरकुस 4:1-10,13-20; लूका 8:4-8,9-15) में उल्लेखित है। आइए हम इस दृष्टांत को मरकुस की पुस्तक से पढ़ें और हम तीनों सुसमाचारों के अध्ययन से इसके पूर्ण ज्ञान को प्राप्त करेंगे।

बीज बोने वाले का दृष्टांत

मरकुस 4:1-10,13-20

1 वह फिर झील के किनारे उपदेश देने लगा और ऐसी बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो गई कि वह झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया और सारी भीड़ भूमि पर झील के किनारे खड़ी रही।

2 और वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत-सी बातें सिखाने लगा, और अपने उपदेश में उसने उनसे कहा,

3 सुनो! देखो, एक बोनेवाला बीज बोने के लिए निकला!

4 और बोते समय कुछ तो मार्ग के किनारे गिरा और पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया।

5 और कुछ पथरीली भूमि पर गिरा जहां उसको बहुत मिट्टी न मिली, और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वह जल्द उग आया।

6 और जब सूर्य निकला, तो झुलस गया, और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गया।

7 और कुछ तो झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा लिया, और

वह फल न लाया।
8 परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और वह उगा, और बढ़कर फलवन्त हुआ; और कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाया।"
9 और उसने उनसे कहा, "जिसके पास सुनने के लिए कान हों, वह सुन ले!"
10 जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उससे इन दृष्टान्तों के विषय में पूछा।
13 फिर उसने उनसे कहा, "क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को कैसे समझोगे?"
14 बोनेवाला वचन बोता है।
15 जो मार्ग के किनारे के हैं जहां वचन बोया जाता है, ये वे हैं जो सुनते हैं, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है।
16 और वैसे ही जो पथरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे हैं कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं;
17 परन्तु अपने भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही दिनों के लिये रहते हैं; इसके बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।
18 जो झाड़ियों में बोए गए ये वे हैं जिन्होंने वचन सुना,
19 और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और अन्य वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दबा देता है और वह निष्फल रह जाता है।
20 और जो अच्छी भूमि में बोए गए, ये वे हैं जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं: कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा।"

बोने वाले का दृष्टांत साधारण और समझने में सरल है, विशेषतः उनके लिए जो पढ़ने या अनुभव से बीज बोने की प्रक्रिया से और पौधों या फसलों के पोषण से परिचित हैं। प्रभु हमारे जीवनों में परमेश्वर के वचन के कार्य के बारे में गहरी और सामर्थी सच्चाइयां बताने के लिए साधारण दृष्टांत का उपयोग करता है। हम जानते हैं कि परमेश्वर का वचन जीवित, सक्रिय, और परमेश्वर की सामर्थ से परिपूर्ण है (इब्रानियों 4:12)। यह दृष्टांत हम पर प्रकट करता है कि किस प्रकार परमेश्वर के वचन में निहित जीवन और सामर्थ को हमारे जीवनों में लागू किया जा सकता है। यह उन बातों को भी प्रकट करता है जो परमेश्वर के वचन के प्रसार ने बाधा डालने से रोकती हैं।

यह दृष्टान्त अन्य सभी दृष्टान्तों को समझने के लिए महत्वपूर्ण कुंजी है। यीशु ने कहाः *“क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को कैसे समझोगे?”* (मरकुस 4:13)। इसके दो महत्वपूर्ण अर्थ हैं.

- सर्वप्रथम, यदि हम इस दृष्टांत से आध्यात्मिक सत्य और अंतर्दृष्टि प्राप्त करना सीखते हैं, तो हम अन्य सभी दृष्टांतों से भी प्राप्त करने में भी सक्षम
- द्वितीय, इस दृष्टांत में प्रकट सत्य वे कुंजियां हैं, जो हमें यीशु के अन्य सभी दृष्टांतों में निहित और प्रकट सत्य को समझने और इसका अनुसरण करने में सक्षम बनाती हैं।

आइए हम बोने वाले के दृष्टांत में प्रस्तुत मुख्य विचारों पर प्रकाश डालें। इस सारांश को प्रस्तुत करने में, हम तीनों सुसमाचारों के समानांतर परिच्छेदों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

1) परमेश्वर का वचन बीज जैसा है (मरकुस 4:14) ।
2) हमारा हृदय वह भूमि है जहां परमेश्वर के वचन का बीज बोया जाता है (मरकुस 4:15) ।
3) यदि फल को ला ना है तो बीज को संरक्षित और पोषित किया जाना चाहिए।
4) हमें वचन को समझना चाहिए (आत्मिक समझ को प्राप्त करके (मत्ती 13:19) । शैतान द्वारा वचन को चोरी करने से रोकने के लिए (मत्ती 13:19) ।
5) चाहे हमें संसार से या शैतान की ओर से कितनी ही मुश्किलों या सताव का सामना करना पड़े, हमें वचन को दृढ़ता से संभाल कर, इसे अपने हृदय में जड़ें जमाने की अनुमति देना चाहिए, ताकि वह

फल ला सके (मरकुस 4:16,17) ।

6) हमें उन बातों से अपने हृदयों की रक्षा करनी चाहिए जो वचन को दबा सकते हैं, संसार की चिंता, धन का धोखा, अन्य वस्तुओं की इच्छा और जीवन के सुखविलास (मरकुस 4:19) ।

7) जब हम हमारे हृदयों में वचन को समझेंगे (मत्ती 13:23), प्राप्त करेंगे (मरकुस 4:20) और बनाए रखेंगे (लूका 8:15), हम अपने जीवनों में फल प्राप्त करेंगे

हम इनमें से प्रत्येक प्रमुख अंतर्दृष्टि पर विस्तार से चर्चा करेंगे, और परमेश्वर के वचन पर मनन के माध्यम से हमारे हृदय में परमेश्वर के वचन का बीज बोने की प्रक्रिया पर विशेष ध्यान देंगे।

4
बीज परमेश्वर का वचन है

लूका 8:11
दृष्टान्त यह हैः बीज तो परमेश्वर का वचन है।

1 पतरस 1:23
क्योंकि तुम ने नाश होने वाला नहीं, परंतु अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवित और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।

इस दृष्टांत में हम जो पहला सत्य देखते हैं, वह यह है कि परमेश्वर का वचन बीज की तरह है। जब आप अपने हाथ में एक बीज रखते हैं तो यह बहुत ही महत्वहीन और बेजान दिखाई देता है। हम कल्पना नहीं कर सकते हैं कि जब एक छोटा बीज ज़मीन में बोया जाता है तो वह अंकुरित होता है, जड़ पकड़ता है, और अंततः एक पौधे या एक विशाल वृक्ष में बढ़ता है। बीज के भीतर एक पूरा नया पौधा या पेड़ पैदा करने की क्षमता है। एक अर्थ में, बीज में रचनात्मक क्षमता है क्योंकि यह ऐसी किसी चीज़ को जन्म देता है जो पहले कभी नहीं थी। इसके अलावा, यदि बीज अपने आप में रहता है, तो बीज-कोष में कहें या भंडार में, यह अपनी क्षमता को जारी करने में असमर्थ है। बीज में जो सामर्थ है वह तभी प्रतीत होती है जब उसे बोया जाता है, और ठीक से पोषित किया जाता है।

प्रत्येक शब्द जो परमेश्वर ने हमसे कहा है वह एक बीज है। बाइबल बीजों का थैला है या बीजों से भरा एक भंडार है। हम परमेश्वर के प्रत्येक वचन या वाचा का उल्लेख चमत्कारी बीज के रूप में कर सकते हैं। इन बीजों में रचनात्मक सामर्थ है, जो परमेश्वर ने हमें दी है। जब परमेश्वर के वचन के ये बीज हमारे हृदयों में बोए जाते हैं और

पोषित होते हैं, वे हमारे जीवन में उस अलौकिक सामर्थ को लागू करेंगे जो उनके पास है।

1 पतरस 1:23 में, परमेश्वर के वचन को *"अविनाशी बीज"* कहा गया है। यहां ग्रीक शब्द *'स्पोरा'* का उपयोग किया गया है। परमेश्वर का वचन चमत्कारी *'स्पोरा'* अर्थात चमत्कारी बीज है। अंतर्निहित सिद्धांत यह हैः परमेश्वर के वचन के भीतर उत्पादन, अर्थात उत्पन्न करने की क्षमता है। इसके भीतर जीवनदायक, रचनात्मक, आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ है। प्रत्येक वचन जो परमेश्वर ने कहा है वह सृजन करने की क्षमता रखने वाला एक चमत्कारी बीज है।

1 पतरस 1:23 बताता है कि परमेश्वर के वचन के द्वारा हमारा नया जन्म हुआ है। याकूब 1:18 में यह बताते हुए इस बात को दोहराता है कि *"सत्य के वचन"* के द्वारा हमारा नया जन्म हुआ है। जब परमेश्वर के वचन (सुसमाचार) का बीज हमारे हृदयों में बोया गया और जब हमने इस पर विश्वास किया, तो उसने हम में जीवनदायक सामर्थ को लागू किया। एक पल में, एक क्षण में, हमारा नया जन्म हुआ। हम नई सृष्टि बन गए। *"अतः यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई"* (2 कुरिन्थियों 5:17)। परमेश्वर का रचनात्मक कार्य हमारी आत्माओं में हुआ (इफिसियों 2:10)। यह रचनात्मक कार्य जो हम में पूरा किया गया (और बहुतों के हृदयों में इसे पूरा किया जा रहा है जो उद्धार पा रहे हैं) सबसे बड़ा आश्यर्चकर्म है जो हम अनुभव करते हैं। यह नए जन्म का चमत्कार है, मसीह में नई सृष्टि बनने का। और यह रचनात्मक आश्यर्चकर्म उस अविनाशी बीज (सुसमाचार) के द्वारा हुआ, अर्थात् परमेश्वर का वचन।

ध्यान दीजिए, कि मसीह में हमें नई सृष्टि बनाए जाने का यह काम हमारे लिए कितना सामर्थी था। हमारे जीवन से शैतान की सामर्थ टूट गई। हमें शैतान के राज्य से निकालकर परमेश्वर के अपने पुत्र

(कुलुस्सियों 1:13) के राज्य में लाया गया। हमें परमेश्वर के परिवार में अपनाया गया। हमने परमेश्वर से जन्म लिया और दैवीय स्वभाव में सहभागी बने। हमें मसीह में लाया गया और मसीह में होने की सभी अद्त आशीषें हमारी बन गई। यह सब और बहुत कुछ एक पल में हमारा हो गया जब परमेश्वर के वचन के बीज ने हमारे जीवन में अपनी चमत्कारी सामर्थ जारी की।

क्या परमेश्वर के वचन के बीज ने हम में कार्य करने की उसकी सामर्थ या क्षमता को खो दिया है? क्या वचन के चमत्कारी बीज हमारे जीवनों में और अधिक आश्चर्यकर्म उत्पन्न करने में असमर्थ हैं? नहीं, बिलकुल नहीं! क्योंकि वचन अविनाशी बीज है। वचन जीवित है, वह सदा बना रहता है और स्थिर है। प्रत्येक वचन जो परमेश्वर ने हमसे कहा है, उसमें हमारे जीवनों में उत्पादन करने की क्षमता है।

परमेश्वर का वचन निर्माण करने के लिए बनाया गया है

यशायाह 55:10,11

10 जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है,

11 उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा।

परमेश्वर ने कहा कि जो वचन उसके मुंह से निकलता है, वह उसके पास खाली नहीं जाएगा। बल्कि जो बात उसे प्रसन्न करती है और जो वह चाहता है उसे वह पूरा करेगा। हम यशायाह 55:10,11 से चार सरल अंतर्दृष्टियां प्राप्त करते हैं.

1) परमेश्वर के वचन को फल देने (या उसे पूर्ण करने हेतु निर्मित किया गया है) ।

2) परमेश्वर का वचन उस बात को पूरा करेगा जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है और जो उद्देश्य उसने चाहा है।

3) जब परमेश्वर अपने उद्देश्य और आनंद को पूरा करना चाहता है, तो वह अपने वचन को बोलता है।

4) परमेश्वर के वचन परमेश्वर के उद्देश्य और आनंद को प्रकट करते हैं।

परमेश्वर जो वचन कहता है (और जो वचन उसने कहे हैं) सिर्फ शब्द नहीं हैं। वे खुद परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता से परिपूर्ण शब्द हैं। वे उत्पादन करने के लिए तैयार किए गए हैं। एक बीज की तरह, प्रत्येक वचन जो परमेश्वर ने कहा है, उसकी परिपूर्णता के लिए अलौकिक क्षमता से भरपूर है।

परमेश्वर ने अपने वचन इस प्रकार रचा है कि वचन द्वारा वही उत्पन्न हो जिसका उसने यहां पृथ्वी पर उद्देश्य रखा है। क्योंकि वह अपने लोगों को आशीष देने का उद्देश्य रखता है (भजन संहिता 3:8), उसका वचन उसी बात को पूरा करेगा। परमेश्वर ने लोगों को चंगा करने का उद्देश्य रखा है (निर्गमन 15:26; निर्गमन 23:25)। इसलिए, उसका वचन बीमारों के लिए चंगाई ले आएगा (भजन संहिता 107:20)। परमेश्वर का यह उद्देश्य है कि उसके लोग उनके जीवनों के लिए ज्ञान, समझ और दिशा प्राप्त करें (यशायाह 48:17; भजन संहिता 32:8) और इसलिए, उसका वचन उसका यह उद्देश्य पूरा करेगा। उसका वचन वह सब कुछ पूरा कर देगा, जो उसने योजनाबद्ध किया है, ठहराया है, चाहा है।

परमेश्वर स्वर्ग में हैं। और जब वह यहां पृथ्वी पर अपने उद्देश्य और खुशी को पूरा करना चाहता है, तो वह अपना वचन जारी करता है। यह बोला गया वचन एक चमत्कारी बीज है। वह परमेश्वर के उद्देश्य

को पूरा करेगा। हम, उसके लोग यहां पृथ्वी पर हैं। उसके अविनाशी वचन की सामर्थ, और उसके आत्मा के कार्य के माध्यम से, परमेश्वर वह कार्य करता है जो उसे प्रसन्न करता है और जो वह हमारे जीवन में चाहता है।

वचन आप में, जो विश्वास करते हैं, प्रभावी रूप से काम करता है

1 थिस्सलुनीकियों 2:13
इसलिए हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा, तो तुमने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया; और वह तुममें जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है।

परमेश्वर ने अपने वचन को मानव जीवन में उसकी सामर्थ का वाहक बनने के लिए तैयार किया है। थिस्सलुनीकियों को लिखी पत्री में पौलुस बताता है कि परमेश्वर का वचन उसकी ईश्वरीय सामर्थ को जारी करता है और वह विश्वास करने वालों के जीवन में प्रभावी रूप से काम करता है। *"प्रभावशाली हो"* शब्द ग्रीक भाषा में *'एनर्जिओ'* है जो दिव्य ऊर्जा या उस अलौकिक सामर्थ को दर्शाता है जो अंदर से जारी की जाती है और जो काम करने में सामर्थ्यशाली है। एम्प्लिफाइड बाइबल में यह संक्षिप्त टिप्पणी दी गई है, *"(विश्वास के लोगों में अपनी अंतर्निहित, अलौकिक सामर्थ का प्रयोग करते हुए)"* (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)| जब हम इसे ग्रहण करते हैं और उस पर विश्वास करते हैं तब परमेश्वर का वचन हमारे जीवन में परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ को जारी करता है।

पवित्र शास्त्र में समाहित परमेश्वर का प्रत्येक वचन एक चमत्कारी बीज है जिसमें प्रत्येक विश्वासी के जीवन में परमेश्वर की बातों को उत्पन्न करने की क्षमता है। चूंकि प्रत्येक बीज अपनी तरह के फलों को जन्म देता है (उत्पत्ति 1:11,12), इसलिए परमेश्वर का प्रत्येक वचन

वही उत्पन्न करेगा जो वह उत्पन्न करने के लिए बनाया गया है। चंगाई के बारे में परमेश्वर का वचन चंगाई को उत्पन्न करेगा। आशीष और समृद्धि से संबंधित परमेश्वर का वचन आशीष और समृद्धि को उत्पन्न करेगा। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित परमेश्वर का वचन हमारे जीवन के उसी क्षेत्र में उत्पादन करेगा।

वचन के बीज के बारे में इस सत्य को बताते हुए, हमें आपको याद दिलाना होगा कि परमेश्वर के वचन को उसकी संपूर्णता में सुनने और पालन करने का सिद्धांत भी है, केवल पवित्र शास्त्र के चुने हुए अंश नहीं। जीवन, स्वास्थ्य, आशीष और कुल भलाई का वचन उन लोगों से किया जाता है जो परमेश्वर की पूर्ण मनसा को सुनते हैं और उनका पालन करते हैं (नीतिवचन 3:1,2,7,8; नीतिवचन 4:20-22)।

5
बीज हृदय में बोया जाना चाहिए

हृदय की मिट्टी

मरकुस 4:14,15
[14] बोनेवाला वचन बोता है।
[15] जो मार्ग के किनारे के हैं जहां वचन बोया जाता है, ये वे हैं जो सुनते हैं, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है।

सभी तीन सुसमाचारों में बोने वाले का दृष्टांत दिया गया है, यह स्पष्ट रूप से बताता है कि वचन का बीज हृदय में बोया गया था (मत्ती 13:19; मरकुस 4:15; लूका 8:12)। हृदय वह भूमि है जहां परमेश्वर के वचन का बीज बोया जाता है।

नए नियम के शब्दों की वाईन की संपूर्ण एक्सपोजीटरी डिक्शनरी के अनुसार, "हृदय" *"नैतिक स्वभाव और आत्मिक जीवन का निवास स्थान दर्शाता है, दुख, इच्छाओं, स्नेह, धारणाओं, विचारों, समझ, तर्क शक्ति, कल्पना, इरादे, उद्देश्य, इच्छा, और विश्वास का स्थान दर्शाता है।"* पुराने नियम में हृदय का उपयोग व्यक्ति के नैतिक व्यक्तित्व के संदर्भ में किया गया है, इसमें *"भावनाएं, कारण और इच्छा शामिल हैं।"* जबकि नया नियम आत्मा (*'न्यूमा'*) और प्राण (*'प्सुचे'*) के बीच अंतर करता है, "हृदय" शब्द का उपयोग अक्सर आत्मा के महत्वपूर्ण अर्थ में किया जाता है जिसमें आत्मा और प्राण (इब्रानियों 4:12) दोनों को शामिल किया गया है। हृदय भीतरी मनुष्यत्व में, छिपे हुए व्यक्ति को (1 पतरस 3:4) या वास्तविक मनुष्य को दर्शाता है। इसलिए, जो वचन हृदय में बोया जा रहा है, उसका अर्थ यह है, कि वचन को भीतरी मनुष्यत्व में, व्यक्ति के आत्मा और प्राण में, व्यक्ति के मूल में ग्रहण

किया जाना चाहिए। वचन को हमारे विश्वास, इच्छाओं, स्नेह, धारणाओं, विचारों, समझ, तर्क, कल्पना, इरादों, उद्देश्यों और समझ के दायरे में ग्रहण किया जाना चाहिए।

बोया गया वचन

याकूब 1:21

इसलिए सारी मलीनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।

याकूब 1:21 में बोए गए वचन में *"बीज के जड़ पकड़ने"* का विचार है, जो ज़मीन के भीतर बढ़ता है, जन्म लेता है, भूमि में जड़ पकड़ता है और भूमि में पड़े बीज के समान वचन हृदय में कार्य करता है। वह हृदय की मिट्टी में जाता है, जड़ पकड़ता है, और फिर प्राण (आत्मा) को प्रभावित करते हुए अंकुरित होता है। यह एक बार फिर इस सच्चाई पर ज़ोर देता है कि वचन को भीतरी मनुष्य्व में ग्रहण किया जाना चाहिए और उसे भीतर बोए जाने और गहराई से जड़ पकड़ने की प्रक्रिया से गुज़रने का मौका दिया जाना चाहिए।

आपके हृदय में

नीतिवचन 4:20-23

20 हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान करके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा।
21 इनको अपनी आंखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर।
22 क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।
23 सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है।

परमेश्वर के वचन को हमारे हृदय में ग्रहण करने की सच्चाई केवल नए नियम का प्रकाशन नहीं है। हम पुराने नियम में ऐसे उदाहरण देखते हैं जब परमेश्वर ने अपने लोगों को अपने हृदयों में अपना वचन संचित करने का निर्देश दिया था। *"और ये आज्ञाएं जो मैं*

आज तुझको सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें" (व्यवस्थाविवरण 6:6; देखिए व्यवस्थाविवरण 11:18)। भजनकार ने कहा, *"मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूं"* (भजन संहिता 119:11अ)।

नीतिवचन 4:20-23 का परिच्छेद सामर्थी बुलाहट है कि हम परमेश्वर के वचन को हमारे हृदयों में उसकी सही जगह दें।

मेरे वचन ध्यान करके सुन — हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए जो बातें हमारे ईर्द-गिर्द मंडराती हैं, उनसे अधिक हम परमेश्वर के वचन पर उद्देश्यपूर्ण रूप से ध्यान देने का चुनाव करते हैं। हर परिस्थिति में किसी बात के विषय में परमेश्वर का वचन क्या कहता है इस बात से हम आरंभ करते हैं। जब हम परमेश्वर के वचन को प्रमुख स्थान देते हैं। यह परमेश्वर के वचन पर ध्यान देना है।

अपना कान मेरी बातों पर लगा — हम परमेश्वर की ओर झुकते हैं और जो उसे कहना है उसे सुनते हैं, जबकि अन्य कई आवाज़ें उनकी राय व्यक्त करती हैं। हम परमेश्वर के वचन से सामंजस्य बनाते हैं और ध्यान बंटाने वाली आवाज़ों को दूर रखते हैं।

इनको अपनी आंखों की ओट न होने दें— हम अपना ध्यान लगातार परमेश्वर के वचन पर लगाते हैं। हम अपने मन की आंखों पर परमेश्वर के वचन को चित्रित करते हैं। हम वचन को "देखते" हैं। हम परमेश्वर के वचन को मौका देते हैं कि वह हमारी कल्पना को भर दे।

उन्हें अपने मन में धारण करें — लक्ष्य यह है कि अंततः हमारे हृदयों में परमेश्वर के वचन का समृद्ध धन संचित हो, वह हमारे आतंरिक व्यक्तित्व को भर दे, हमारे सारे विचारों, उद्देश्यों, इच्छाओं, और तर्क

को व्याप्त करे। इसका परिणाम होगा जीवन और स्वास्थ्य जो हमें वचन के द्वारा दिया जाएगा।

अपने हृदयों को उसके वचन से भरना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हृदय हमारे जीवनों में जो कुछ होता है उसका स्रोत, सोता है। यदि वचन हमारे हृदयों को भरता है, तो वचन हमारे जीवनों में उसका जीवन और सामर्थ जारी करता है। इस तरह, हमारे जीवन परमेश्वर के वचन की सामर्थ के द्वारा प्रभावित होते हैं, आकार पाते हैं, और रचे जाते हैं।

वचन आपके निकट है

व्यवस्थाविवरण 30:11-14

11 देखो, यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, वह न तो तेरे लिये अनोखी, और न दूर है।

12 और न तो यह आकाश में है, कि तू कहे, कि कौन हमारे लिये आकाश में चढ़कर उसे हमारे पास ले आए, और हमको सुनाए कि हम उसे मानें?

13 और न यह समुद्र पार है, कि तू कहे, कौन हमारे लिये समुद्र पार जाए, और उसे हमारे पास ले आए, और हमको सुनाए कि हम उसे मानें?

14 परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुंह और मन ही में है, ताकि तू इस पर चले।

यदि हम उसके वचनों को अपने हृदयों में बसाने का प्रयास करते हैं, तो वचन हमेशा हमारे *"बहुत निकट"* है। हृदय एक बड़े भंडार की तरह है जहां हम परमेश्वर के वचन को संजो कर रख सकते हैं। हृदय में जो भरा होता है वह मुंह से निकलता है, जब वचन हमारे हृदयों और मुखों में भरा हो, तो हम कभी लाचारी और निराशा की भाषा नहीं बोलेंगे। हमारी भाषा आशाहीनता की बात नहीं करेगी, मानो परमेश्वर और उसका वचन स्वर्ग में या समुद्र के पार कहीं दूर है। जब वचन हमारे हृदय और मुंह को भर देंगे, तो हम उसके अनुसार जीएंगे। यह इतना दिलचस्प है कि प्रेरित पौलुस ने रोमियों 10:6-8 में इस परिच्छेद

को व्यवस्थाविवरण 31:11-14 से उद्‌त किया है, यह हमें, नए नियम के विश्वासियों को संबोधित करता है। इसलिए हमारे हृदयों और मुंह में परमेश्वर के वचन को संचित कर रखने के पीछे जो अंतर्निहित सच है, उस पर हम नए नियम के विश्वासियों को चलना चाहिए।

ध्यान या मनन के माध्यम से

फिर बड़ा सवाल यह है कि हम परमेश्वर के वचन के बीज को अपने हृदयों में कैसे संचित कर सकते हैं? बोने वाले के दृष्टांत में, बोने वाला का बीज बोना वचन सुनने के लिए समान है। और हम जानते हैं कि बीज बोने के अलावा इसे भूमि में मिलना चाहिए और अंकुरित होना चाहिए। इसी तरह, हम देखते हैं कि वचन को हमारे हृदयों में बोया जाना चाहिए। हम इसे कैसे पूरा होने देते हैं?

हालांकि बोने वाले के दृष्टांत में नहीं कहा गया है, परंतु यदि हम पवित्र शास्त्र की शिक्षा के साथ सुसंगत बने रहते हैं, तो हमें पता चलता है कि यह परमेश्वर के वचन के ध्यान के अभ्यास से संभव है।

परमेश्वर के वचन में ध्यान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपने हृदयों में वचन का एक समृद्ध संचय कर सकते हैं। हम वचन को सुनते हैं और ग्रहण करते हैं ताकि वचन हम में बोया जाए, पोषित हो, और हमारे जीवनों में फल ला सके।

जब हम अपने आप को वचन में ध्यान करने के लिए अनुशासित करते हैं और उसके वचनों को हमारे हृदयों में बिठाते हैं, तो हम किसी भी समय कहीं भी, उसके वचन तक पहुँच सकते हैं। हम अपने मुंह के शब्दों से हमारे हृदयों में संचित वचनों के संग्रह को निकाल सकते हैं। हमने वहां जो रखा है उसे हम बोलते हैं। जब वचन हमारे मुंह और हमारे हृदय में भर जाता है, तो यह हमारे पास हो जाता है। और यह सक्रीय रीति से हमें परमेश्वर के वचन में लगभग कहीं भी और किसी

भी समय ध्यान करने में सक्षम बनाता है। आदर्श रूप से हम एक शांत स्थान चाहेंगे जो सांसारिक शोर से बहुत दूर हो, जहां हम बैठ सकें और हमारे समक्ष खुली बाइबल के वचनों का ध्यान और मनन कर सकें। परंतु, यदि हमने उसके वचन को अपने हृदय में बसा लिया है, तो हम व्यस्त सड़क पर चलते या राजमार्ग पर गाड़ी चलाते हुए भी कहीं भी वचन का ध्यान कर सकते हैं।

अगले अध्याय में हम परमेश्वर के वचन में ध्यान करने की बाइबल प्रक्रिया में एक गहरा गोता लगाएंगे।

6
परमेश्वर के वचन पर मनन करना

पिछले अध्यायों में, हमने इस बात पर ज़ोर दिया है कि परमेश्वर का वचन हमारे विश्वास का स्रोत और नींव है। हमने परमेश्वर के वचन की शुद्धता और सामर्थ का परीक्षण किया। हमने इस तथ्य को प्रस्तुत किया कि परमेश्वर का वचन परमेश्वर की सामर्थ से भरा है और यह सामर्थ हमारे जीवन में जारी हो सकती है। हम इस तथ्य को भी समझ गए हैं कि परमेश्वर का वचन एक बीज की तरह है, जिसे जब हमारे हृदय में बोया और पोषित किया जाता है, तो यह हमारे जीवन में परिवर्तनकारी सामर्थ को जारी करेगा। अब हम परमेश्वर के वचन पर ध्यान या मनन के अनुशासन का पता लगाने हेतु एक कदम आगे बढ़ाते हैं। ध्यान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपने हृदय में परमेश्वर के वचन का बीज बोते और उसका पोषण करते हैं।

साधारणत: जब हम “ध्यान” शब्द का उल्लेख करते हैं, तो लोग तपस्वियों द्वारा किए जाने वाले कुछ रहस्यमय अभ्यास के बारे में सोचते हैं। शायद, यह इसका कारण है कि सामान्यतः पर कलीसिया ध्यान के अभ्यास पर ज़ोर नहीं देती। जबकि यह सच है कि सम्पूर्ण संसार की संस्कृतियों में ध्यान की प्रक्रिया के अपने-अपने विभिन्न रूप हैं, हमारा लक्ष्य ध्यान के लिए एक पवित्र शास्त्र सम्मत दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है। एक विश्वाससी होने के नाते, हमें इसके महत्व को समझना चाहिए और अपने विश्वास के अनुसार इसे अनुशासनपूर्वक विकसित करना चाहिए।

ध्यान—एक शास्त्रीय अनुशासन

उत्पत्ति 24:63अ

और सांझ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिए निकला था; और उसने आंखें उठाकर क्या देखा कि ऊंट चले आ रहे हैं।

बाइबल में "ध्यान" शब्द का सबसे पहला उल्लेख इसहाक के बारे में उत्पत्ति की पुस्तक में किया गया है। यद्यपि इस बात की ज़्यादा जानकारी नहीं है कि वह किस तरह या किस बात पर ध्यान या मनन कर रहा था, यह देखना रुचिकर है कि पहले के समय में पवित्र शास्त्र में ध्यान किया जाता था। इसके अलावा, इसहाक ध्यान करने के लिए मैदान में गया, जो हमें बताता है कि सामान्यतः ध्यान करने के लिए सही वातावरण बनाने के लिए सब प्रकार की ध्यान भटकाने वाली बातों और हस्तक्षेपों से व्यक्ति दूर होना चाहेगा।

यहोशू 1:8

व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।

ध्यान या मनन के विषय में एक सुविख्यात वचन है, यहोशू 1:8। प्रभु ने अपने दास मूसा के द्वारा अपने लोग इस्राएलियों को व्यवस्था दी। मूसा ने इस्राएलियों के दिलों पर यह छाप डाली कि परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था उन्हें दी यह उनके लिए कितने विशेषाधिकार की बात है। उदाहरण के तौर पर, इन वचनों पर विचार करें जो मूसा ने इस्राएल से कहे|

व्यवस्थाविवरण 4:5-8

[5] सुनो, मैंने तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधि और नियम सिखाए हैं, कि जिस देश के अधिकारी होने जाते हो उसमें तुम उनके अनुसार चलो।

6 सो तुम उनको धारण करना और मानना; क्योंकि और देशो के लोगों के सामने तुम्हारी बुध्दि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात् वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुध्दिमान और समझदार है।
7 देखो, कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा, जब कि हम उसको पुकारते हैं?
8 फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूं?

इसके अलावा, प्रभु अपने लोगों को निरंतर याद दिलाता था कि उसकी इच्छा है कि वे उसके वचन को अपने हृदयों में रखें और निरंतर उसकी आज्ञाओं को मानें। बारम्बार, हम इस प्रकार के बयानों को पढ़ते हैं, *"और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझको सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें"* (व्यवस्थाविवरण 6:6) और *"इसलिये तुम मेरे ये वचन अपने-अपने मन और प्राण में धारण किए रहना, और चिन्हानी के लिये अपने हाथों पर बान्धना, और वे तुम्हारी आंखों के मध्य में टीके का काम दें"* (व्यवस्थाविवरण 11:18अ)। यही आज्ञा यहोशू के लिए भी दोहराई जा रही थी, जो कि अब इस्राएल का अगुवा था। परमेश्वर यहोशू को आज्ञा दे रहा था, उसे कह रहा था कि वह दृढ़ हो और अत्यंत हियाव रखे और सावधानी के साथ उस सारी व्यवस्था का पालन करे जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा दी थी (यहोशू 1:7)। उसके बाद प्रभु ने यहोशू के सामने एक अनुशासन का विषय रखा ताकि वह अपने हृदय में वचन को ग्रहण करने के लिए उसका इस्तेमाल कर सके और सावधानी के साथ उनका पालन कर सके। प्रभु ने यहोशू से कहा, *"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा"* (यहोशू 1:8अ)।

यह ध्यान देना दिलचस्प है कि परमेश्वर यहोशू को यह निर्देश दे रहा था कि वह रात और दिन उसके वचन का ध्यान करे। इसलिए

परमेश्वर के वचन में मनन एक अनुशासन है जिसकी खुद परमेश्वर ने आज्ञा दी है और प्रोत्साहन दिया है। यह ऐसा अनुशासन है जिसका पालन हम करें यह परमेश्वर की इच्छा है।

इस प्रक्रिया पर ध्यान दें...

1) व्यवस्था की पुस्तक उसकी बोलचाल का हिस्सा होना था। (*"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए;"* (यहोशू 1:8))

2) उसे निरंतर उसके वचन पर ध्यान करना था। (*"इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना"* (यहोशू 1:8))

ध्यान या मनन ऐसा अनुशासन है जो हमें पवित्र शास्त्र में दिया गया है जो हमारी सहायता करता है कि हम परमेश्वर के वचन को हमारे हृदय (आत्मा) में और प्राण (मन) में संचित करें। बाइबल में ध्यान करने पर अन्य कई संदर्भ हैं, विशेषकर भजनों की पुस्तक में भजन संहिता 1 पवित्र शास्त्र का सुविख्यात परिच्छेद है जो हमें धर्मी व्यक्ति की अनुशासित जीवनशैली के बारे में सिखाता है। वह हमें बताता है कि ऐसा व्यक्ति अधर्मियों की सलाह पर नहीं चलता, पापियों के मार्ग का अनुसरण नहीं करता, और ठट्ठा करने वालों की गतिविधि में शामिल नहीं होता। *"परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है"* (भजन संहिता 1:2)। धार्मिकता और परमेश्वर के वचन के निरंतर मनन के अनुशासनपूर्ण अभ्यास से वह जो कुछ करता है उसमें फलवंत होता है, उन्नति और समृद्धि पाता है (भजन संहिता 1:3)।

पवित्र शास्त्र में मनन करना परमेश्वर के वचन को मनन करने तक सीमित नहीं है। हम अन्य विषयों को भी पाते हैं जिन पर हम मनन कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, हम स्वयं प्रभु पर मनन

कर सकते हैं। प्रभु, उसका चरित्र, उसके गुण हमारे ध्यान या मनन का लक्ष्य बन जाते हैं। इस्राएल का मधुर भजनकार, दाऊद कहता है, *"जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा। तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा"* (भजन संहिता 63:6)। दूसरे भजनकार ने लिखा, *"मेरा ध्यान करना, उसको प्रिय लगे, क्योंकि मैं तो यहोवा के कारण आनंदित रहूंगा"* (भजन संहिता 104:34)।

हम उन अद्‌त बातों पर भी मनन कर सकते हैं जो प्रभु ने हमारे जीवनों में की हैं। दाऊद ने कहा, *"मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अद्‌त कामों पर ध्यान करता हूं, और तेरे काम को सोचता हूं"* (भजन संहिता 143:5)। इस्राएल का दूसरा भजन रचयिता आसाफ ने लिखा, *"मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूंगा, और तेरे बड़े कामों को सोचूंगा"* (भजन संहिता 77:12)। हम बुद्धि और समझ की बातों पर भी ध्यान और मनन कर सकते हैं। भजनकार ने लिखा, *"हे देश-देश के सब लोगो, यह सुनो! हे संसार के सब निवासियो, कान लगाओ! क्या ऊंच, क्या नीच, क्या धनी, क्या दरिद्र, कान लगाओ! मेरे मुंह से बुद्धि की बातें निकलेंगी; और मेरे हृदय की बातें समझ की होंगी"* (भजन संहिता 49:1-3, किंग जेम्स संस्करण)।

ध्यान—बाइबल आधारित दृष्टिकोण

ध्यान या मनन यह पवित्र शास्त्र का तरीका है और स्वयं परमेश्वर ने उसके लिए प्रोत्साहन दिया है, और यह कि इस रीति से हम परमेश्वर के वचन को अपने हृदयों में संचित कर सकते हैं यह समझने के बाद, हमारा अगला उद्देश्य है यह सीखना कि कैसे मनन करें।

पुराने नियम में "ध्यान" के लिए प्रयुक्त दो मुख्य इब्रानी शब्द हैं। इब्रानी शब्द 'हागा' का अर्थ है "चिंतन करना, कल्पना करना, मनन करना, कराहना, गुर्राना, बड़बड़ाना, शांत स्वर निकालना जैसे आह भरना, शब्दों को दोहराते हुए किसी बात पर मनन करना।" दूसरा

इब्रानी शब्द *'सियाच'* मुख्य रूप से भजन संहिता 119 में प्रयुक्त किया गया है, यह शब्द भी वही अर्थ रखता है "मनन करना, सोच-विचार करना, अर्थात वार्तालाप करना (अपने आपसे, इसलिए ऊंची आवाज में) बोलना, संवाद स्थापित करना, बातचीत करना, घोषित करना, सोच-विचार करना, प्रार्थना करना, बोलना, कहना।" द स्पिरिट फिल्ड लाईफ बाइबल पहले शब्द पर यह टिप्पणी करता है। वह कहता है, *"हागाह अंग्रेजी भाषा के "ध्यान" से बिल्कुल विपरीत बात को दिखाता है, जो कि केवल मानसिक अभ्यास को ही दर्शाता है। इब्रानी विचार में पवित्र शास्त्र के वचनों पर मनन करने का मतलब खामोशी के साथ, सौम्य, गुनगुनाती हुई आवाज के साथ दोहराना है, साथ ही साथ बाहरी बातों पर ध्यान नहीं देना है जो ध्यान भटकाने की कोशिश करती हैं। इस परम्परा से एक विशेष प्रकार की यहूदी प्रार्थना आती है जिसे "डेवेनिंग" कहा जाता है, अर्थात वचनों को दोहराना, प्रबलता से प्रार्थना करना, झुककर या आगे-पीछे डोलते हुए परमेश्वर के साथ वार्तालाप में खो जाना। स्पष्ट रूप से ध्यान-प्रार्थना का यह सामर्थी स्वरूप दाऊद के समय से चलता आया है"* (पृष्ठ 753,754, थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1991)।

ध्यान या मनन मुख्य रूप से मानव आत्मा का एक क्रियाकलाप है जो प्राण (विचार, बुद्धि, कल्पना, भावना, और इच्छाशक्ति का वास स्थान) तक पहुंच जाता है और भौतिक शरीर को प्रभावित करता है। शिक्षा के उद्देश्य से हम तीन शब्दों का इस्तेमाल करके मनन या ध्यान का सारांश प्रस्तुत करेंगे—**चिंतन, कल्पना करना,** और **अंगीकार करना**। किसी भी समय में, ध्यान करते समय, हम इन तीनों में से किसी एक या उससे अधिक प्रक्रियाओं में शामिल हो सकते हैं। हम किसी एक विशिष्ट विषय के बारे में गहरा चिंतन कर सकते हैं, या किसी विशिष्ट विषय का चिंतन करते समय उस विषय में कल्पना भी कर सकते हैं, या अंगीकार में भी सम्मिलित हो सकते हैं।

इनमें से प्रत्येक पर विस्तृत रूप से विचार करेंगे।

चिंतन—अपनी अंतरात्मा में सोचना

भजन संहिता 143:5

मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अद्‌त कामों पर ध्यान करता हूं, और तेरे काम को सोचता हूं।

ध्यान का यह पहलू हमारे विचार और बुद्धि को व्यस्त करता है। हम किसी विशेष विषय के बारे में गहराई से सोचते हैविचार करते हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि हम परमेश्वर के वचन से किसी विशिष्ट विषय पर, मान लीजिए कि दिव्य चंगाई पर विचार करते हैं, और हमने यशायाह 53:4 को पवित्र शास्त्र के वचन के रूप में चुना है, तो हम अपने चिंतन के दौरान इस वचन के अर्थ पर, उसके महत्व, और निहितार्थों पर विचार करेंगे। हम जानते हैं कि यीशु ने हमारी बीमारियों को उठा लिया और हमारे सारे दुखों को सह लिया। उसने हमारे प्रतिस्थापक के रूप में ऐसा किया और, इस कारण हमें उन्हें सहने की आवश्यकता नहीं है। हम अपनी अंतरात्मा में समझते हैं और उस पर तर्क करते हैं। हम अपने दैनिक जीवन में उसके उपयोग के बारे में सोचते हैं। हम गलत कल्पनाओं और विचारों का परीक्षण करते हैं जो पहले हमारे मनों में होगी और हम उन पर ध्यान नहीं देते।

हम विश्वास करते हैं कि जब हम परमेश्वर के वचन में गहरा चिंतन करने में समय बिताते हैं तब परमेश्वर का आत्मा हमसे प्रसन्न होता है। अक्सर, जब हमारा ध्यान भटकाने वाली बाहरी बातों से हम अपने आपको अलग करते हैं और चिंतन में अपना ध्यान परमेश्वर के वचन पर लगाते हैं, तब प्रभु का आत्मा हमें धीरे से हमारे विचार की प्रक्रिया में आगे ले चलता है। हमारे मनों में वह नए विचार और अंतर्दृष्टियों को डालकर हमारे विचारों को प्रेरणा देता है और निर्देशित करता है। प्राचीन समय के लोगों ने पवित्र शास्त्र के वचनों को लिखने

हेतु कैसे प्रेरणा प्राप्त की थी इसका वर्णन करते समय, प्रेरित पतरस ने कहा, *"क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, परंतु भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे"* (2 पतरस 1:21)। *"उभारे जाकर"* यह शब्द ग्रीक भाषा के 'फेरो' से आता है, जिसका अर्थ है "आगे उठाकर ले चलना, ले जाना।" वाईन के शब्दकोष में पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के बारे में निम्नलिखित टिप्पणियां है। यह शब्दकोष कहता है, *"पवित्र आत्मा की सामर्थ से वे आगे ले जाए गए, या प्रेरित किए गए, उन्होंने अपनी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं किया, केवल अपने ही विचारों का उपयोग नहीं किया, परंतु परमेश्वर द्वारा दिए गए और प्रदान किए गए शब्दों में उन्होंने परमेश्वर की मनसा को व्यक्त किया"* (पृष्ठ 420, थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985)।

भविष्यवक्ताओं ने ऐसी बातों के विषय में कहा जो उनकी समझ से परे थीं, इतना कि उन्हें यह ढूंढ़ने की आवश्यकता थी, *"उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहले ही से मसीह के दुखों की और उनके बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था"* (1 पतरस 1:11)। उसी तरह, जब हम वचन पर चिंतन करते हैं तब पवित्र आत्मा हमारे विचारों में आगे ले चलता है। पवित्र आत्मा हमारा शिक्षक है। यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा हमसे उन बातों को कहेगा जो वह यीशु को कहते सुनता है (यूहन्ना 16:12-15)। ऐसा अक्सर तब होता है जब हम उसके वचन पर चिंतन या ध्यान करने के लिए उन सारी बातों से अपने आपको अलग करते हैं जो हमारा ध्यान भटकाती हैं। ओह! यह ऐसा अद्‌त अनुभव है, जब "प्रभु का हाथ" जो कि मधुर पवित्र आत्मा है, धीरे से हम पर उतर आता है और जब हम परमेश्वर के वचन के गहरे चिंतन में होते हैं तब हमें अपने विचारों में आगे ले चलता है। अक्सर प्रभु की उपस्थिति इतनी गहरी हो जाती है, कि खुशी और धन्यवाद के आंसू उस अद्‌त प्रकाशन और समझ के समय बहने

लगते हैं जो वह प्रदान करता है।

चिंतन हमारे विचार को प्रभावित करता है। वह ऐसे मन को उत्पन्न करता है जो परमेश्वर के वचन के द्वारा नवीनीकृत है। पवित्र शास्त्र हमें हमारे हृदय के नवीनीकरण के बारे में सिखाता है (रोमियों 12:2अ)। हमें आज्ञा दी गई है कि हम हमारी बुद्धि की आत्मा (स्वभाव) में नए बन जाएं (इफिसियों 4:23)। जिस व्यक्ति का मन परमेश्वर की पूर्ण मनसा (परमेश्वर के पूरे वचन) के लिए नया बन गया है वह *"परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा"* (रोमियों 12:2ब) जानने में सक्षम हो जाता है। परमेश्वर के वचन के मनन / चिंतन के अनुशासनपूर्ण अभ्यास से, हमारे *"ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो जाते हैं"* (इब्रानियों 5:14ब)।

दृश्य की कल्पना –आपकी कल्पना से चित्र बनान

उत्पत्ति 15:1-6

1 इन बातों के पश्चात् यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, कि हे अब्राम मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं।
2 अब्राम ने कहा, हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं, और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएजेर होगा, सो तू मुझे क्या देगा?
3 और अब्राम ने कहा, मुझे तो तू ने वंश नहीं दिया, और क्या देखता हूं, कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस होगा।
4 तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि यह तेरा वारिस न होगा; तेरा जो निज पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा।
5 और उसने उसको बाहर ले जाकर कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है?
6 उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।

उस समय से लेकर तब तक, जब परमेश्वर ने पहली बार अब्राम को एक महान राष्ट्र का पिता बनाने का वचन दिया था, कई वर्ष बीत चुके थे। सारा और अब्राहम निःसंतान थे, और उनके लिए यह स्पष्ट

रूप से एक चिंता का विषय था। इस समय के दौरान, प्रभु ने अब्राहम से बातें की और उसे अपने वास्तविक वचन के विषय में आश्वासन दिया। प्रभु ने जो किया उस पर विचारपूर्वक ध्यान दें। एक रात प्रभु अब्राहम को उसके घर से बाहर ले गया, उसे आज्ञा दी कि वह तारों से भरे आकाश को देखे और उससे पूछा कि क्या वह उन तारों को गिन सकता है। फिर उसने अब्राहम से कहा, *"तेरे वंश को भी मैं ... अनगिनत करूंगा"* (उत्पत्ति 15:5)| वस्तुतः परमेश्वर अब्राहम को उसके वचन का दृश्य चित्र दे रहा था। परमेश्वर की वाचा की परिपूर्णता कैसे दिखाई देगी इस कल्पना के साथ वह बारम्बार उस चित्र को देख पा रहा था। बाद में, प्रभु ने अब्राहम से कहा, *"... निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बाल के किनकों के समान अनगिनित करूंगा ..."* (उत्पत्ति 22:17)।

दृश्य की कल्पना करना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसका अभ्यास हम मनन में करते हैं। हम कल्पना की सामर्थ से देखते हैं कि परमेश्वर का वचन हमें क्या बता रहा है। उदाहरण के तौर पर, यदि हम बीमार हैं, तो हम अपने आपको भला चंगा और स्वस्थ देखते हैं, हम जैसे हैं वैसे अपने आपको देखते हैं और वह सबकुछ करते हुए देखते हैं जो वचन हमारे बारे में कहता है। ध्यान की प्रक्रिया में कल्पना करना हमारी कल्पना-शक्ति को व्यस्त रखता है।

सामान्य तौर पर, कलीसिया ने कल्पना की सामर्थ का उपयोग करने को नज़रअंदाज किया है। दूसरी ओर वचन मीडिया व्यापार, मुद्रित विज्ञापन आदि के द्वारा हमारी कल्पना को लगातार प्रभावित करता है। कल्पना हमारे व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण भाग है। परमेश्वर ने उसे तैयार किया और हमें इसका इस्तेमाल करने के लिए उसे हमें सौंप दिया। हमारी कल्पना हमारे आचरण को और जो निर्णय हम लेते हैं उसे प्रभावित करती है। वे जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं और हमारी आत्म-प्रतिष्ठा का निर्धारित करते हैं।

कई लोगों के दिल में खुद के बारे में एक बुरी कल्पना होती है (या "आत्महीनता") जिसने उन्हें लोगों के भय से, अज्ञात के भय से, खतरा उठाने के भय से बांधकर रखा है या उनके मन में खुद के विषय में ऐसी तस्वीर है जो उन्हें हीनता के बोध से भर देती है। परंतु, जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं और परमेश्वर हमारे बारे में जो कहता है कि हम हैं, उसके विषय में कल्पना करने लगते हैं (या चित्र देखने लगते हैं) तब हमारी अपने बारे में छवि बदलने लगती है। वस्तुतः न केवल हमारी अपनी छवि बल्कि जीवन का हमारा पूरा दृष्टिकोण और हमारे आसपास की परिस्थितियां बदलने लगती हैं।

गिनती 13 में पुराने नियम की एक समान घटना है जो यहां पर उत्तम उदाहरण के रूप में उपयोगी सिद्ध होगी। परमेश्वर अपने लोगों को इस वायदे के साथ मिस्र की बंधुवाई से बाहर निकाल ले आया था कि वह उन्हें विरासत के रूप में कनान देश देगा। वाचा के देश में प्रवेश करने की तैयारी में, प्रभु ने मूसा को निर्देश दिया कि उस देश का भेद लेने के लिए 12 पुरुषों को प्रत्येक कुल से अगुवे के रूप में भेजे, इन 12 पुरुषों ने देश का सर्वेक्षण और तलाश करने में 40 दिन बिता दिए। फिर उन्होंने लौटकर अपना समाचार दिया। वे सभी इस बात से सहमत थे कि वह देश फलवंत और समृद्ध है। परंतु, उनमें से 10 उस देश में रहने वाले महाकायों से डर रहे थे। उन्होंने कहा, *"उन लोगों से लड़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हमसे बलवान हैं... वह देश जिसका भेद लेने को हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है; और जितने पुरुष हम ने उसमें देखे वे सब के सब बड़े डीलडौल के हैं। फिर हम ने वहां नपीलों को, अर्थात् नतीली जाति वाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में तो उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे"* (गिनती 13:31-33)। केवल दो लोग सकारात्मक समाचार लेकर आए और उन्होंने कहा, *"हम अभी चढ़कर उस देश को अपना कर लें; क्योंकि निःसन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है"* (गिनती

13:30ब)। इन सभी 12 पुरुषों ने महाकायों को देखा होगा, परंतु जिस तरह की प्रतिक्रिया उन्होंने व्यक्त की वह भिन्न थी। उनमें से दो को भरोसा था क्योंकि उन्हें स्मरण था कि परमेश्वर उनके साथ है (गिनती 14:6-9)। बाकी 10 पुरुषों ने अपनी नकारात्मक कल्पना को अपने आप पर हावी होने दिया। उन्होंने अपने मन की आंख से जो देखा, उसने उन्हें कमज़ोर कर दिया। उन्होंने अपने आपको उन विशाल शरीर वालों के सामने छोटी टिड्डियों के रूप में चित्रित किया। इस बात ने उन्हें भयभीत कर दिया और परमेश्वर में उनके भरोसे को छीन लिया। दुख की बात यह है कि, कई मसीही इन 10 पुरुषों के समान जीवन की परिस्थितियों से होकर गुज़रते हैं। अपने मन की आंख से—उनकी कल्पना से जो वे देखते हैं वह उन्हें विश्वास का जीवन जीने से और प्रभु की समृद्ध आशीषों का आनंद उठाने से रोकती हैं। परंतु, मनन के अनुशासन के द्वारा, हम अपनी कल्पना की दीवारों पर ताज़ा तस्वीरों को चित्रित कर सकते हैं।

यह देखना दिलचस्प है कि पवित्र शास्त्र में कई स्थानों में, विशेषकर पुराने नियम में, जो हम देखते हैं उसके साथ परमेश्वर व्यवहार करता है। उसने अपने वाचा के लोगों को पुराने नियम में यह कहते हुए एक नियम दिया, *"इसलिये तुम मेरे ये वचन अपने अपने मन और प्राण में धारण किए रहना, और चिन्हानी के लिये अपने हाथों पर बान्धना, और वे तुम्हारी आंखों के मध्य में टीके का काम दें"* (व्यवस्थाविवरण 11:18; व्यवस्थाविवरण 6:8; निर्गमन 13:9,16 भी देखें)। एक समय लोग पवित्र शास्त्र के वचनों को अपने बाएं हाथ पर बांधकर या माथे पर पहनकर इस वचन का पालन करते थे। "चिन्हानी" इस शब्द के अर्थों में से एक है "दृश्य उदाहरण।" परमेश्वर चाहता था कि उसके लोगों के पास उसके वचन का और जो कुछ उसने उनके लिए किया था उसका दृश्य स्मरण हो। जो उन्होंने देखा था उसे परमेश्वर प्रभावित करता था, क्योंकि जो कुछ वे देखते उसके द्वारा उन्हें प्रभु के कामों को स्मरण हो आता। नए नियम में हमारे पास ऐसी प्रथा नहीं है, लेकिन हमें

व्यक्तिगत तौर पर यह लगता है कि हम परमेश्वर के वचन को अपनी कल्पनाओं की दीवारों पर चित्रित करें, ताकि हम लगातार परमेश्वर के समृद्ध वायदों को "देख" सकें और उनका समरण कर सकें। उसी तरह पुराने नियम के परिच्छेद में प्रभु कहता है, *"हे मेरे पुत्र, मेरे वचन ध्यान करके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा। इनको अपनी आंखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर"* (नीतिवचन 4:20,21अ)। फिर एक बार, हम एक सूचना पाते हैं जो लगातार वचन को "देखने" के महत्व का वर्णन करती है। हम विश्वास करते हैं कि हम एक अर्थ से, इसका संबंध हम अपने मनों में जो कल्पना करते हैं, तस्वीर खींचते हैं और मनों में देखते हैं उनके साथ है।

स्वीकृति–वही कहना जो परमेश्वर ने कहा है

यहोशू 1:8

व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।

यहां पर प्रभु यहोशू को आज्ञा दे रहा था कि वह *"रात और दिन"* ध्यान करे। गौर करें कि उसने यह कहकर शुरूआत की, *"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी उतरने न पाए।"* दूसरे शब्दों में, प्रभु यहोशू से कह रहा था, कि व्यवस्था की पुस्तक में समाहित ये शब्द निरंतर उसकी बोलचाल का भाग बनने पाएं। इसलिए, मनन की प्रक्रिया के एक भाग के रूप में, हमें पवित्र शास्त्र के वचनों को अपने मुंह में बनाए रखना है, अर्थात हमें पवित्र शास्त्र के वचनों को बोलना / दोहराना / कंठस्थ करना है। जैसा कि पहले समझाया गया है, यह इब्रानी लोगों की एक प्रथा थी। ध्यान या मनन के दौरान, वे झुककर या आगे-पीछे डोलते हुए, बाहरी ध्यान भटकाने वाली बातों से बेखबर होकर, शांतिपूर्वक धीमी, गुनगुनाती आवाज़ में पवित्र शास्त्र के वचन

को दाहराते थे।

नए नियम में, हमें *"अंगीकार करना"* और *"अंगीकार"* इन शब्दों से परिचित होना है। ये मसीही विश्वास के महत्वपूर्ण शब्द है। उद्धार तब महत्वपूर्ण हो जाता है जब हम अपने मुंह से प्रभु यीशु को कबूल या अंगीकार करते हैं और अपने हृदयों में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया (रोमियों 10:9)। आगे, नया नियम हमें अपने पापों के अंगीकार के बारे में (1 यूहन्ना 1:9) और अपने विश्वास के अंगीकार के बारे में सिखाता है (इब्रानियों 3:1)। जिन दो ग्रीक शब्दों का अनुवाद "अंगीकार करना" या "अंगीकार" किया गया है, वह शब्द *'होमोलोजियो'* आम तौर पर इस्तेमाल किया जाता है और उसका शाब्दिक अर्थ है, "उसी बात को कहना, सहमत होना, सम्मत होना।" हमने "अंगीकार" शब्द का इस्तेमाल ध्यान के इस तीसरे पहलू का वर्णन करने के लिए किया क्योंकि जब परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम उसके वचन को दोहराएं / कहें / कंठस्थ करें, तो वस्तुतः वह हमें आज्ञा दे रहा है कि हम उसके वचन को "अंगीकार" करें। वह हमसे कहता है कि परमेश्वर का वचन जो कहता है "उसे कहने के लिए," हमारे शब्दों को उसके वचन के साथ सहमत करने के लिए, हम "एक ही बात को कहें।"

इसे समझाने के लिए, हम कहें कि हम परमेश्वर के वचन में मनन कर रहे हैं, विशेषकर यशायाह 53:4 और मत्ती 8:17 में पाए जाने वाले वचनों में। ये वचन बताते हैं कि मसीह ने किस प्रकार क्रूस पर अपने प्रतिस्थापक कार्य अतः हमारा स्थान लेने के द्वारा हमें चंगाई प्रदान की। हम इन वचनों पर मनन करते हैं कि उनका क्या अर्थ है, वे हमें किस प्रकार लागू होते हैं। हम कल्पना करते हैं कि ये वचन हमारे जीवन में सत्य हैं। हम कल्पना करते हैं और अपने आपको बीमारी से मुक्त, सारे दर्द से चंगा, संपूर्ण और पूर्ण रूप से स्वस्थ पाते हैं। हमारे मनन के भाग के रूप में, हम इन वचनों को अंगीकार करते हैं,

स्वीकार करते हैं। हम धीमी परंतु सुनाई देने वाली आवाज़ में कहते हैं, *"निश्चय ही उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे दुखों को उठा लिया। यीशु ने स्वयं हमारी दुर्बलताओं को उठा लिया और हमारे रोगों को सह लिया"* (यशायाह 53:4)। हम इन्हें कई बार दोहराते हैं। या इन वचनों का क्या अर्थ है इस विषय में हम अपने आप से बोलते हैं। ध्यान या मनन के हमारे अपने समयों में, कभी-कभी मैं अपने आपको वचन का प्रचार करता हूं। मैं परमेश्वर से प्रार्थना में पवित्र शास्त्र के वचनों को अंगीकार करता हूं। उदाहरण के तौर पर, जब हम इन वचनों पर मनन करते हैं, तब हम प्रार्थना करते और कहते हैं, *"पिता, आपके वचन के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। धन्यवाद, पिता, कि इन वचनों के अनुसार, यीशु ने मेरे रोगों को सह लिया और मेरे दुखों को उठा लिया। उसने मेरी सारी दुर्बलताओं को उठा लिया और मेरे रोगों को सह लिया। धन्यवाद, पिता, इसलिए मुझे मेरे शरीर में रोग और बीमारी को सहने की ज़रूरत नहीं है।"*

इस तरह से परमेश्वर के वचन स्वीकार करना या अपनाया जाने का हमारे जीवनों पर अद्‌त परिणाम होता है। इस तरह से वचन को अंगीकार करने का हमारे जीवन पर अद्‌त प्रभाव पड़ता है। यह हमारी अंतरात्मा में परमेश्वर के वचन को मज़बूत बनाता है। हमारा विश्वास बना हुआ है क्योंकि विश्वास परमेश्वर के वचन (रोमियों 10:17) को सुनने के द्वारा आता है। जब हम इस तरीके से वचन को स्वीकार या अंगीकार करते (अपनाते) हैं, तो हम वस्तुतः वचन को सुनते हैं। वचन को स्वीका करने का निरंतर अभ्यास निश्चित रूप से हमारे बोलने के तरीके को बदल देगा। वास्तव में, जब प्रभु हमें अपने वचन को लगातार अपने मुंह में रखने का निर्देश देता है, तो इसका अर्थ यह है कि जो कुछ भी उसके वचन का खंडन करता है, वह हमारी बातचीत का हिस्सा नहीं होना चाहिए।

परमेश्वर के वचन में ध्यान करने के द्वारा परमेश्वर से भेंट और बातचीत करना

भजन संहिता 63:1-6

1 हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।
2 इस प्रकार से मैंने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं।
3 क्योंकि तेरी करूणा जीवन से भी उत्तम है, मैं तेरी प्रषंसा करूंगा।
4 इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूँगा; और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊंगा।
5 मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा, और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूंगा।
6 जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा। तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा।

पवित्र शास्त्र पर आधारित ध्यान प्रभु के साथ निकट सहभागिता का समय है। भजन का लेखन, उपर्युक्त परिच्छेद में, परमेश्वर के लिए अपनी तीव्र इच्छा को व्यक्त करता है। परमेश्वर के लिए उसकी इच्छा ने उसे परमेश्वर को पवित्र स्थान में ढूंढ़ने के लिए प्रेरित किया और उसे प्रेरित किया कि वह अपने हाथों को उठाकर और आनंदमय होठों के साथ परमेश्वर की स्तुति करे। उसने उसे रात की खामोशी में प्रभु पर मनन करने के लिए प्रेरित किया। उसी तरह, परमेश्वर के साथ निकटता की हमारे हृदयों की इच्छा के कारण, हम अपने विचारों को और अपनी बातचीत को पूर्ण रूप से प्रभु पर केन्द्रित करते हैं। जब हम परमेश्वर के विषय में गहरा ध्यान करते हैं, तब हम केवल अपनी बुद्धि से वचन का विश्लेषण नहीं करते, बल्कि हम ऐसे समय की ओर बढ़ते हैं और परमेश्वर के साथ वार्तालाप करते हैं। वह ऐसा वचन बन जाता है जो परमेश्वर वर्तमान समय में हमसे बोलता है। उसकी *"शांत धीमी आवाज़"* (1 राजाओं 19:12) उस पल की खामोशी में ऊंची और स्पष्ट हो जाती है। परमेश्वर की उपस्थिति

हमें अभिभूत करती है। वह ऐसा समय बन जाती है जहां प्रभु हमारे अंदर एक गहरा काम करता है, और अपने ऊर्जा एवं बलयुक्त शब्दों के द्वारा हमारे अंदरूनी व्यक्तित्व को बदलने लगता है। इस समय के दौरान, प्रभु हमारे हृदयों में जो बोलता और करता है उसका हम उत्तर दे सकते हैं। हम उसके वचन के आधार पर पश्चाताप, विश्वास, आनंद, तारीफ, और प्रभु के प्रति धन्यवाद को व्यक्त कर सकते हैं। गम्भीर प्रार्थनाओं, या फुसफुसहाट के शब्दों से, या गम्भीर अंगीकार के द्वारा, हम अपने विचारों, भावनाओं, इच्छाओं, और प्रभु के प्रति योग्यता को जारी करते हैं। सत्य का प्रकाशन हमारे अंदर उमड़ने लगता है। हमारी आत्मिक आंखें परमेश्वर के राज्य के भेदों को देखने और समझने के लिए खुल जाती हैं। सत्य हमारे आंतरिक व्यक्तित्व में प्रबल और संचित हो जाता है। हमारे मन के झूठ, धोखे और गढ़ों को धराशायी कर दिया जाता है। जब हम उसके पवित्र वचन में ध्यान करते हैं, तब यह व्यक्तिगत अंतरंग मुलाकात और प्रभु के साथ मधुर संवाद का समय होता है।

ध्यान के परिणाम

2 कुरिन्थियों 10:3-5

3 क्योकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते।

4 क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।

5 इसलिए हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

विश्वासियों को जिन नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है उन्हें ऊपर सूचीबद्ध किया गया है। ये *"गढ़," "विवाद," "हर एक ऊंची बात जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है"* और *"हर एक*

विचार" हैं। इन सब का संबंध विश्वासी के मन से है। मन एक युद्ध भूमि है। और परमेश्वर ने हमें सफल युद्ध लड़ने के लिए शस्त्र दिए हैं, ताकि हम संघर्ष के इन सभी क्षेत्रों में विजय को अनुभव कर सकें। परंतु समस्या यह है कि कई लोग जो विश्वासी बन जाते हैं, अब भी उन गढ़ों, कल्पनाओं, तर्कों, और विचारों के साथ बने रहते हैं जो परमेश्वर के ज्ञान के विरोध में हैं (जैसा कि हमें परमेश्वर के लिखित वचन में बताया गया है)। परिणामस्वरूप, कई लोग उनके जीवनों के कई क्षेत्रों में हारी हुई दशा में और बंधन में हैं।

वचन में ध्यान, हालांकि सब बातों का इलाज नहीं है, एक महत्वपूर्ण अनुशासन है जो हमें मन की इन चुनौतियों से निपटने में मदद करता है। वचन में ध्यान करने के अनुशासित अभ्यास के माध्यम से गढ़ों को नीचे गिराया जा सकता है। जो व्यक्ति परमेश्वर के वचन के ध्यान में लगा रहा है, उसे कल्पनाओं, तर्कों और विचारों को परमेश्वर के ज्ञान (परमेश्वर के वचन) का आज्ञाकारी बनना आसान होता है।

वचन में सुसंगत रूप से ध्यान या मनन करने का परिणाम नवीनीकृत मन, नवीनीकृत बोलचाल और नवीनीकृत विश्वास में होता है। हमारे सोचने का ढंग, हमारी आत्म-छवि, हमारा आत्म-सम्मान, और हमारे व्यक्तित्व के अन्य पहलू जो हमारे मन की स्थिति पर निर्भर करते हैं, बदलने लगते हैं। हम जीवन और हमारे भविष्य के बारे में सकारात्मक, आश्वस्त और आशान्वित हो जाते हैं। हम बिना दर्शन वाले लोगों से बदलकर साहसी और आक्रामक दर्शन या दृश्य देखने वाले बन जाते हैं। हम नए शब्दकोष से बोलना शुरू करते हैं। गरीबी, हार और बेचारेपन की बातचीत में बंधे रहने के बजाय, हम ईश्वर में दृढ़ विश्वास से बात करते हैं। ध्यान के माध्यम से हमारे हृदयों में वचन की निरंतर बुआई और सिंचाई होती है, जो हमारे अंदर परमेश्वर में एक जीवंत विश्वास को उत्पन्न करती है।

ध्यान के फल

भजन संहिता 1:1-3

[1] क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्टा करनेवालों की मंडली में बैठता है!
[2] परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।
[3] वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता हैं, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।

परमेश्वर का वचन एक चमत्कारी बीज है। यह उत्पादन करने की क्षमता रखता है। जब यह हमारे हृदयों में बोया जाता है, तो वह परमेश्वर की भलाई की हर इच्छा को हमारे जीवन में पूरा करेगा। ध्यान की प्रक्रिया के माध्यम से हम अपने हृदय में परमेश्वर के वचन का बीज बोते हैं और उसका पोषण करते हैं। बीज अपने नियत समय में अंकुरित होकर फल देगा। इसलिए ध्यान का सुसंगत अभ्यास परमेश्वर के वायदों को वास्तविकता बनाने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

उन फलों पर विचार करें जो परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों में उत्पन्न कर सकता है।

- वचन वह अविनाशी बीज है जो आत्मा के कार्य के साथ हमारे जीवनों में नया जन्म उत्पन्न करता है (1 पतरस 1:23)।
- वचन वह औषधी है जो हमारे शरीर के हर एक अंग के लिए चंगाई ले आती है (नीतिवचन 4:20-22; भजन संहिता 107:20)।
- परमेश्वर के वचन के खुलने से अंतर्दृष्टि, समझ और बुद्धि प्राप्त होती है (भजन संहिता 119:98-100,130)।
- वचन सफलता और सम्पन्नता लाता है (यहोशू 1:8; भजन

संहिता 1:3)

- वचन आत्मिक उन्नति और परिपक्वता ले आता है (प्रेरितों के काम 20:32)।

और उसके बाद परमेश्वर की कई आशीषें हैं जो उसने हमें अपने वचन में दी हैं।

यदि हम वचन में ध्यान करने के द्वारा इन बीजों को बोएंगे और उनका पोषण करेंगे, तो ये सभी बातें हमारे जीवनों में उत्पन्न की जा सकती है।

जो व्यक्ति धर्मी जीवन बिताता है और सुसंगत तरीके से परमेश्वर के वचन पर ध्यान करता है वह उस अच्छे सिंचित पेड़ के समान होता है। उसकी जड़ें पोषण और ताज़गी की निरंतर आपूर्ति से जुड़ी होती हैं। ऐसा तब होता है जब हम सुसंगति के साथ परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं। आंतरिक व्यक्ति पोषण और ताज़गी की अंतहीन आपूर्ति से आशीष पाता है। हमारे जीवन फलवंत और फलदायक होते हैं।

ध्यान के अनुशासन का विकास करना

प्रतिदिन का अनुशासन

भजन संहिता 119:97
अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।

हम आपको प्रोत्साहन देना चाहते हैं कि परमेश्वर के वचन में प्रतिदिन मनन करने के अनुशासन का विकास करें। यह आपकी आदत बन जाए, एक धार्मिकतापूर्ण आदत भी। परमेश्वर के वचन में मनन करना एक अनुशासन है, जो सूचित करता है कि हम ऐसा तब भी करते हैं जब हमें करने का मन नहीं होता, या भले ही ऐसा लगता

है कि हम बहुत व्यस्त हैं। दूसरी ओर, हमें ऐसा परमेश्वर के वचन में शुद्ध आनंद से करना चहिए। हम प्रभु से प्रेम करते हैं और इसलिए हम उसके वचन से प्रेम करते हैं। यह हमें ऐसे समयों की ओर प्रेरित करता है जहां हम ध्यान के माध्यम से परमेश्वर के वचन पर पूरा पूरा ध्यान देते हैं।

विशेष ज़रूरत के समयों में

भजन संहिता 119:23,24,78
23 हाकिम भी बैठे हुए आपस में मेरे विरूद्ध बातें करते थे, परन्तु तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा।
24 तेरी चितौनियां मेरा सुखमूल और मेरे मंत्री हैं।
78 अभिमानियों की आशा टूटे, क्योंकि उन्होंने मुझे झूठ के द्वारा गिरा दिया है, परन्तु मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान दिया करूंगा।

ऐसा समय रहा है और जारी है कि कई बार मुझे विभिन्न संघर्षों, चुनौतियों, सवालों, और चिंताओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे समयों में, आत्मा में प्रार्थना करने के अलावा, मैं पवित्र शास्त्र के वचनों में ध्यान करने की कोशिश करता हूं जो उस चुनौती को सम्बोधित करते हैं जिनका मैं सामना करता हूं। हो सकता है कि मेरा मन उलझन में हो, उसमें कई सवाल हो, और अनिश्चितता के हालात हो। लेकिन मैं पवित्र शास्त्र के वचनों में जाता हूं जो इस विषय पर परमेश्वर के विचारों को प्रकट करते हैं। मैं उन पर मनन करता हूं। ये मेरे हृदय में अचल शांति, और आश्वासन ले आते हैं। अन्य समयों में, मैं किसी विशिष्ट चुनौती को लेता हूं और मैं जानता हूं कि मुझे प्रभु की ओर से अतिरिक्त बल और प्रोत्साहन पाना होगा। ऐसे समयों में, मैं फिर एक बार पवित्र शास्त्र के वचनों की ओर मुड़ता हूं जो उस परिस्थिति में उचित होते हैं और मैं उन पर मनन करता हूं। पवित्र शास्त्र विश्वास और बल का स्रोत बन जाता है। हम सभी ऐसी आशीषों का लाभ उठा सकते हैं।

उद्देश्यपूर्ण अभ्यास

भजन संहिता 119:148
मेरी आंखें रात के एक-एक पहर से पहले खुल गई, कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूं।

परमेश्वर के वचन में मनन एक अर्थहीन अभ्यास नहीं है, न ही वह केवल गम्भीर रूप से आत्मिक लोगों के लिए है। यह हम सभी के उपयोग के लिए है। ऐसे संसार में (मसीही जगत भी) जो तुरंत उपाय, और तुरंत चमत्कार को पसंद करते हैं, हो सकता है कि आत्मिक अनुशासन का विकास करने का विषय लोकप्रिय न हो। परंतु हमको प्रोत्साहन दिया जाता है कि हम स्वयं आत्मिक बातों का अभ्यास करें (1 तीमुथियुस 4:7)। अभ्यास एक अनुशासन है। ऐसा समय हो सकता है जब अनुशासन (आत्मानुसान) आसान न हो। उसके लिए कुछ त्याग की भी ज़रूरत हो सकती है। परंतु, अनुशासन के प्रतिफल समृद्ध और स्थायी होते हैं। काश, आप भी उनमें से एक हों, जो वचन में ध्यान करने का आनंद उठाकर ऐसा करने हेतु समृद्ध पुरस्कारों की कटनी काटें।

व्यवहारिक कल्पनाएं

मैं अब कुछ व्यवहारिक सुझाव देना चाहता हूं जो परमेश्वर के वचन में ध्यान करने के अनुशासन का विकास करने हेतु हमारी सहायता कर सकते हैं। ये कानून, या नियम नहीं हैं और हमें किसी प्रक्रिया, कार्यप्रणाली या कार्य-व्यवस्था के बंधन में नहीं आना है। मैं उन बातों को बता रहा हूं जिन्हें मैंने अपने खुद के जीवन में उपयोगी पाया है, ऐसा कुछ जिसे करना मैंने मेरे युवावस्था के वर्षों में ही शुरू किया था। आप इनमें से कुछ सुझाव आपके लिए उपयोगी हो सकते हैं और आपके आत्मिक जीवन को अनुकूल बना सकते हैं। परमेश्वर आपको अन्य विचार दे सकता है कि किस प्रकार आप उसके वचन में ध्यान

कर सकते हैं, जो आपके लिए उचित हो सकता है।

मैं तीन व्यावहारिक कल्पनाओं को प्रस्तुत करता हूंः

1) वचन के बीज

2) प्रतिदिन वचन पर मनन करने की दिनचर्या

3) मननशील बाइबल वाचन

वचन के बीज

मेरी आत्मिक यात्रा के आरम्भ में, मेरी जवानी के प्रारम्भिक वर्षों में, मैंने आत्मिक वचनों के विषयों के अनुसार वर्गीकरण करना सीखा। यह बिल्कुल उसी प्रकार है जिस प्रकार वाचनालय में पुस्तकों को वर्गीकृत करके उन्हें शेल्फ पर रखा जाता है। ऐसे विषयों की सूची इस पुस्तक के आखिरी अध्याय में दी गई है। जब मैं विशिष्ट विषय पर परमेश्वर के वचन में ध्यान करना चाहता था, तो मैं सरलता से उस सम्बंधित वचनों को याद कर सकता था और उन्हें पढ़ सकता था। इस तरह, यदि मुझे विश्वास के विषय पर मनन करने की आवश्यकता होती, तो मैं पवित्र शास्त्र के उन वचनों को पढ़ता जो मैंने विश्वास के विषय में एकत्रित किए थे। यह बीज बोने के समान है। हम समझते हैं कि प्राकृतिक क्षेत्र में, हम उस फसल के अनुसार बीज बोते हैं जो हम पाना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि प्रत्येक बीज अपनी ही तरह के पौधे का जन्म देता है। उसी तरह, विशिष्ट विषय पर पवित्र शास्त्र में ध्यान करने से, हम हमारी आवश्यकतानुसार बीज बोते हैं। यह कंठस्थ करने की प्रक्रिया में भी सहायता करता है, क्योंकि जब आप बार-बार इन वचनों पर मनन करते हैं, तो वे आपके स्मरण में बोए जाते हैं।

किसी विशिष्ट उद्देश्य से जब मैं आराधना सभा में प्रचार करने की तैयारी करता हूं, तब भी इसका प्रयोग करता हूं। जितनी बार हम

वचन का प्रचार करते हैं, उतनी बार हम चिन्ह, चमत्कार, आश्यर्चकर्म और चंगाई के माध्यम से पवित्र आत्मा के प्रकट होने के लिए तैयार रहने की इच्छा रखते हैं, उसी समय ऐसी सभाएं लेते हैं जो विशिष्ट तौर पर अलौकिक प्रदर्शनों की आशा करते हैं। हम सुसमाचार की क्रूसेड सभाएं, विशेष चंगाई और आश्चर्यकर्म की सभाएं आदि ले सकते है जहां पर मकसद आश्चर्यकर्म और चंगाई पाने के लिए लोगों की सेवा करना होता है। ऐसी सभाओं में सेवा करने की तैयारी के रूप में, अन्य-अन्य भाषाओं में बहुत प्रार्थना करने के अलावा, मैं संबंधित विषयों पर पवित्र शास्त्र के वचनों में मनन करने हेतु समय बिताता हूं, जैसेः आत्मा का अभिषेक, विश्वासी का अधिकार, आत्मा के वरदान, चंगाई, यीशु के आश्चर्यकर्म, विश्वास और भविष्यवाणी, इत्यादि। यह मेरी आत्मा को पैना और अनुकूल बनाता है और मुझे सेवा करने के लिए तैयार करता है।

प्रतिदिन वचन पर मनन करने की दिनचर्या

जो खिलाड़ी विशिष्ट खेल के लिए प्रशिक्षण पाते हैं, उनकी सामान्य तौर पर एक साप्ताहिक दिनचर्या होती है। वे एक ही तरह के व्यायामों को बार-बार करते हैं, और हर बार उसमें थोड़ा और जोड़ते हैं। मेरी आत्मिक यात्रा के आरंभिक वर्षों में मैंने एक प्रतिदिन के वचन पर ध्यान करने की दिनचर्या अपनाई थी। मैंने यह फैसला किया था कि मैं विशिष्ट विषयों पर रोज़ मनन किया करुंगा। मैं पवित्र शास्त्र के वचन के उन बीजों का उपयोग करता था जो मेरे पास थे और उनको दोहराता था, पवित्र शास्त्र के प्रत्येक वचन पर कुछ पल ध्यान करता था, उसे पढ़ता था, अंगीकार करता था, उसके साथ परमेश्वर की आराधना करता था। उसके बाद मैं कुछ और सहज चीज़ों की ओर बढ़ता था जहां पर मैं आवश्यकता पड़ने पर ध्यान करता था। आपकी वर्तमान स्थिति / आवश्यकताऐं क्या हैं इसके आधार पर आप भी समान प्रतिदिन की दिनचर्या तैयार करने की इच्छा रख सकते हैं।

प्रतिदिन के वचन पर ध्यान की दिनचर्या जिसे मैंने कुछ निश्चित समय से उपयोग में लाया है.

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
प्रार्थन उदारता	विश्वास	दिव्य चंगाई	परिवार	बुद्धि और समझ	सफलता और संपन्नता	सेवकाई और आश्चर्यकर्म

मननशील बाइबल वाचन

मेरी आत्मिक यात्राओं में जिन आदतों ने मेरी बहुत मदद की है वह है मननशील बाइबल वाचन। कई बाइबल वाचन योजनाएं एक निश्चित अवधि के भीतर एक निश्चित संख्या में अध्यायों और पुस्तकों को पूरा करने पर केंद्रित होती हैं। हालांकि यह अच्छा है और इसके लाभ हैं, परंतु मैं पढ़ने में और जो मैं पढ़ रहा हूं उस पर ध्यान करने में समय बिताना पसंद करता हूं। सो, वचन में मेरा नियमित समय अध्यायों की कुछ निश्चित संख्या पूरी करने के लिए नहीं होता परंतु मैं वचन से प्राप्त करना चाहता हूं। इसलिए मैं अध्याय के कुछ वचन पढ़ता हूं, और इन कुछ वचनों पर मनन करने में और परमेश्वर से भेंट करने और वचन का प्रकाश प्राप्त कर उसे अपने अंतःकरण मे संचित करने में समय बिताता हूं और जब मुझे लगता है कि मुझे आगे बढ़ने की आवश्यकता है, तब मैं आगे वाले वचनों की ओर बढ़ता हूं। अक्सर, मैं वचनों के एक ही सेट पर कुछ दिन बिता सकता हूं, 30 मिनट या उससे अधिक पढ़ने, चिंतन, मनन करने और उन वचनों के माध्यम से परमेश्वर से भेंट करने में बिता सकता हूं। बहुत बार परमेश्वर की उपस्थिति मुझे अभिभूत कर देती, प्रकाश उण्डेला जाता और मैं उन बातों को लिखता हूं जो मैं देख रहा हूं और समझ रहा हूं। मेरा जीवन रूपांतरित हो गया है। और निश्चित रूप से, ऐसे समय में ही कई उपदेशों का जन्म हुआ है।

उदाहरण के तौर पर, कभी सितंबर 2019 में, मैंने अपने प्रतिदिन

के प्रार्थना समय के भाग के रूप में मरकुस रचित सुसमाचार पढ़ना आरम्भ किया। मैंने मरकुस 1:1 पढ़ा, *"परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ"* और मैं इस एक वचन से आगे ही नहीं बढ़ पा रहा था। मैं चार दिनों तक मरकुस 1:1 पर ही बना रहा, रोज़ 30 मिनटों तक या उससे अधिक समय, उस वचन में खोया हुआ, तल्लीन रहता था। जब भी मैं उस वचन को पढ़ता परमेश्वर की उपस्थिति मुझे अभिभूत कर देती। *"परमेश्वर का पुत्र"* यह शब्द उस पृष्ठ पर स्पष्ट दिखाई दे रहा था। जब मैंने मरकुस 1:1 के उस हिस्से पर अपनी कल्पना में ध्यान किया तब मैं अनंत काल से होते हुए यात्रा करते हुए अनंत वचन को जो पिता और आत्मा के साथ एक था, उसे देखने के लिए समय के आरम्भ से पहले जा पहुंचा, और फिर समय की यात्रा करते हुए जैसा कि हम जानते हैं, उस अनंत वचन को अपने आप को देहधारी वचन, परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रकट करते हुए देखने के लिए, और उसे वह करते हुए देखने के लिए जा पहुंचा जो उसने उसकी मृत्यु, गाड़े जाने, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण, और महिमान्वित होने में किया। ऐसा लग रहा था कि सम्बंधित वचन बाइबल के उन पन्नों से बाहर निकलकर आ रहे हैं। और इस सत्य को समझने के लिए कि जिस सुसमाचार का हम प्रचार कर रहे हैं वह इस परमेश्वर के पुत्र का सुसमाचार है, अभिभूत करने वाला अनुभव था। मरकुस 1:1 के वे चार दिन सचमुच परमेश्वर के बेटे की मुलाकात का एक समृद्ध अनुभव था। जो कुछ मैं लिख सकता था मैंने लिख लिया। मैंने अपनी आत्मा में उस वचन को थाम लिया, उसे अपने अंदर गहराई से जमने दिया। अंत में 2019 के क्रिसमस के दिन मैंने उस पर प्रचार किया और उससे उपस्थित लोगों को सेवा का लाभ मिला (उपदेश यहां उपलब्ध हैं **apcwo.org/sermons**).

मेरी प्रार्थना है कि आप भी इस आदत को अपनाएं और परमेश्वर के वचन पर ध्यान करने का आनंद उठाए!

7
बीज की रक्षा और पोषण किया जाना चाहिए

शैतान वचन के पीछे पड़ा है

मत्ती 13:19
जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे 'वह दुष्ट' आकर छीन ले जाता है। यह वही बीज है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था।

मरकुस 4:14,15
14 बोनेवाला वचन बोता है।
15 जो मार्ग के किनारे के हैं जहां वचन बोया जाता है, ये वे हैं जो सुनते हैं, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है।

लूका 8:11,12
11 दृष्टान्त यह है: बीज तो परमेश्वर का वचन है।
12 मार्ग के किनारे के वे हैं जो वचन सुनते हैं; तब शैतान आकर उनके मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएं।

बीज बोने वाले का दृष्टांत हमें महत्वपूर्ण आत्मिक सच्चाई प्रदान करता है—शैतान वचन के पीछे पड़ा है। इससे पता चलता है कि परमेश्वर के वचन को सुनना, हमारे हृदयों में उसे ग्रहण करना, और उसका पोषण करना कितना महत्वपूर्ण है! शैतान जानता है कि यदि हम वचन को ग्रहण करेंगे तो वह हमारे जीवनों में फल लाएगा और हमें विजय, अधिकार, और प्रभुता में चलाएगा। जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:14 में लिखा है, *"हे जवानों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है*

कि तुम बलवन्त हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है, और तुमने उस दुष्ट पर जय पाई है।"

इसलिए हमें परमेश्वर के वचन से दूर करने के लिए, शैतान इस प्रयास में अपने बल का उपयोग करेगा कि हमें...

- अरूचि, आलस, व्यस्तता, ध्यान भंग आदि के द्वारा परमेश्वर का वचन सुनने से रोके.
- भ्रम, झूठ, धोखा आदि के द्वारा उसे समझने से रोके.
- संदेह, अविश्वास, भय आदि के द्वारा उस पर विश्वास करने से हमें रोके।

जबकि, प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए शैतान की रणनीतियों को प्रकट किया है, अतः हम उसके विरोध में उपाय कर सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारे हृदयों में परमेश्वर के वचन का समृद्ध रूप से संचय करने हेतु अपनी भूमिका निभाएं। परमेश्वर का वचन आपके अंदर बहुतायत से बसने पाए!

बीज की रक्षा करें और उसका पोषण करें

बीज बोने वाले के दृष्टांत से हम दूसरी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं, वह यह है कि यदि हम चाहते हैं कि फलों का उत्पादन हो तो समय के साथ बीज की रक्षा और पोषण किया जाना चाहिए। बागवानी या खेती के हमारे ज्ञान से हम इसे तुरंत समझ सकते हैं।

प्रभु यीशु ने दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों को रेखांकित किया जहाँ पर हम उन खतरों का सामना करेंगे जो बीज को फल लाने से रोक सकते हैं या हमें फसल से वंचित कर सकते हैं। उसने इन बातों का उल्लेख किया...

- वचन के विरोध में सताव और मुश्किलें और

- इस संसार की चिताएं, धन का धोखा, अन्य वस्तुओं की चाह, और जीवन के सुखविलास।

हम अलग अध्यायों में फसल को रोकने वाली इन बातों का अवलोकन करेंगे।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है बीज का पोषण करना। प्राकृतिक क्षेत्र में हम सुनिश्चित करते हैं कि बीज को सूरज की पर्याप्त रोशनी, पानी, और पोषक तत्व प्राप्त हों, ताकि वह अंकुरित हो सके, बढ़ सके, और फल ला सके। उसी तरह, हमें अपने हृदयों में एक अनुकूल वातावरण बनाए रखना है जहां पर वचन के बीज का पोषण किया जा सकता है। परमेश्वर के वचन का उल्लेख पानी (इफिसियों 5:26) और प्रकाश (भजन संहिता 119:105) के रूप में किया गया है। इस तरह हम वचन में निरंतर ध्यान करते हुए वचन के बीज का पोषण करते हैं (पानी और रोशनी देते हैं), निरंतर प्रकाशन प्राप्त करते हैं (शायद पोषक तत्वों के समान), और आत्मा से भरपूर होकर चलते हैं (कुलुस्सियों 3:15; इफिसियों 5:18,19)।

परमेश्वर के राज्य का बीज सिद्धांत

मरकुस 4:26-29

26 मैंने ये बातें तुम्हें उनके विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमाते हैं।
27 और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुममें बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया, तुम्हें सब बातें सिखाता है; और यह सच्चा है, और झूठा नहीं। और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है, वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो।
28 निदान, हे बालको, उसमें बने रहो, कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों।
29 यदि तुम जानते हो कि वह धार्मिक है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उससे जन्मा है।

बीज का अंकुरण सामान्य तौर पर मिट्टी के नीचे होता है। हम जानते हैं कि वह हो रहा है, भले ही हम उसे नहीं देखते। उसके लिए समय लगता है। समय के साथ, हम उसकी बढ़ोत्तरी के चिन्ह देखते हैं, क्योंकि अंकुर ज़मीन के ऊपर दिखाई देता है। इससे पहले कि पौधा या पेड़ बड़ा होकर फल दे, इसमें समय की आवश्यकता पड़ती है।

बीज बोने वाले के दृष्टांत के बाद, हमें परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाने के लिए, फिर एक बार बीज का उदाहरण लेते हुए प्रभु यीशु ने दूसरा दृष्टांत कहा (मरकुस 4:26-29)। इस दृष्टांत में, प्रभु यीशु ने हमें एक सामान्य बीज सिद्धांत बताया जो परमेश्वर के राज्य में कार्य करता है। यह बीज सिद्धांत परमेश्वर के राज्य में हमारे जीवन के कई विभिन्न पहलुओं पर लागू होता है। यह बीज सिद्धांत स्पष्ट रूप से उस प्रक्रिया पर भी लागू होता है जिसके द्वारा परमेश्वर का वचन-चमत्कारी बीज-हमारे जीवनों में फल उत्पन्न करता है।

परमेश्वर के राज्य के बीज सिद्धांत के बारे में मुख्य अंतर्दृष्टियां ये हैंः

1) बीज को बोया जाना चाहिए।

2) इससे पहले कि बढ़ौत्तरी के कोई चिन्ह प्रकट हों कुछ समय बीतना ज़रूरी है।

3) बीज फल को लाएगा, भले ही हम नहीं जानते कि कैसे।

4) जब फसल का समय आता है, तब हमें उसे इकट्ठा करने के लिए हंसिया चलाना है (दूसरे शब्दों में, फसल इकट्ठा करने में हमें एक भूमिका निभानी है)।

एक महत्वपूर्ण सिद्धांत हमें समझना है, बीज के फल लाने से पहले एक समय बीत जाएगा। परमेश्वर के वचन के ये बीज जो हमारे हृदयों में बोए जा रहे हैं, हो सकता है कि रातोंरात बहुतायत की फसल

न ले आए। विशिष्ट तौर पर, एक समय बीतेगा और उसके बाद हम परिणाम देखेंगे और बीजों के फल देखेंगे जिन्हें हम अपने हृदयों में बोते रहे हैं।

आरंभ में हम केवल तीस गुणा फसल को अनुभव कर सकते हैं। परंतु हम जानते हैं कि कुछ समय का बीतना बीज के अंकुरित होने और बढ़ने के लिए आवश्यक है। हम अपने हृदयों में यह जानते हुए वचन का बीज बोना जारी रखते हैं कि जल्दी फसल का समय आएगा। और उसके बाद, जब हम वचन का बीज बोते रहेंगे, तो हम कई समृद्ध और भरपूर फसलों को पाएंगे जिनका उत्पादन वचन करता है।

हम पूर्ण रूप से समझा नहीं सकते कि हमारे हृदयों में परमेश्वर के वचन का बीज बोना कैसे उस वचन को हमारे जीवनों में फल लाने के लिए सक्षम बनाएगा। उदाहरण के तौर पर, हम पूर्णतया यह स्पष्ट नहीं कर सकते कि यदि व्यक्ति सफलता और संपन्नता के बारे में वचन का बीज बोता है, तो यह वचन उन्हें जो कुछ वे करते हैं उसमें सफलता और समृद्धि को अनुभव करने का कारण बनेगा। उसी तरह, हम पूर्ण रूप से यह नहीं समझा सकते कि जब कोई चंगाई और स्वास्थ्य के लिए परमेश्वर के वचन का बीज बोते हैं, तो वे परमेश्वर की सामर्थ को कैसे अनुभव कर सकते है। जो उन्हें बीमारी और रोग से चंगा करेगा और उन्हें अच्छे स्वास्थ्य में रखेगा। हम केवल यह कह सकते हैं कि वचन बीज के समान है, और बीज फल लाएगा, भले ही हम नहीं जानते कि कैसे। जब बीज अच्छी भूमि पर बोया जाता है और पोषित किया जाता है, तो वह फल लाएगा जो लाने के लिए उसे उत्पन्न किया गया था।

8

प्रकाशनः आत्मिक समझ प्राप्त करना

जब हम परमेश्वर के वचन को नहीं समझ सकते

मत्ती 13:19

जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे 'वह दुष्ट' आकर छीन ले जाता है। यह वही बीज है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था।

प्रभु यीशु ने कहा कि जब हम वचन को नहीं समझ पाते हैं, तब शैतान आकर उस बीज को चुरा लेता है, और इस तरह उसे जड़ पकड़ने से और हमारे जीवन में फल लाने से रोकता है। हमें वचन को समझना है (आत्मिक सत्य की समझ पाना है) ताकि शैतान उसे चुरा न सके। शैतान तर्क, गड़बड़ियां, झूठ, धोखा आदि बातों के माध्यम से हर तरह से कोशिश करता है कि हम वचन की समझ प्राप्त न कर सकें।

"समझना" इस शब्द के लिए इस्तेमाल किया गया ग्रीक शब्द का अर्थ है "एक साथ जोड़ना, समझना।" हमें बुद्धिमानी के साथ और बौद्धिक रूप से वचन को समझना चाहिए, परंतु साथ ही साथ आत्मिक सत्य की समझ पाने का पहलू भी है, जिसे हम "प्रकाशन" कहते हैं।

लूका 8:12

मार्ग के किनारे के वे हैं जो वचन सुनते हैं; तब शैतान आकर उनके मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएं।

शैतान नहीं चाहता है कि हम उस स्थान पर आएं जहां पर हम वचन पर विश्वास करें, इसलिए वह कोशिश करता है कि वचन का

प्रकाशन प्राप्त करने से पहले और हमारे उस पर विश्वास करने से पहले उसे हमसे दूर करे। परंतु, जब हम वचन को समझते हैं या उसका प्रकाशन प्राप्त करते हैं, तब हम उस वचन पर विश्वास कर सकते हैं और हमारे जीवनों में कार्य करने वाली परमेश्वर की सामर्थ को अनुभव कर सकते हैं।

पवित्र शास्त्र और मानवीय बुद्धि

1 कुरिन्थियों 2:14

परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है।

हमारी बुद्धि की योग्यता के द्वारा हम पवित्र शास्त्र के वचनों को पढ़ सकते हैं और समझ सकते हैं। हम इब्रानी और ग्रीक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उस संदर्भ का अध्ययन करने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग करते हैं जिसमें पवित्र शास्त्र लिखा गया था। परमेश्वर ने हमें बुद्धि दी है और हम उसका सही उपयोग कर सकते हैं।

किन्तु स्वाभाविक मनुष्य अपनी स्वाभाविक बुद्धि के साथ उन परमेश्वरीय सच्चाइयों को नहीं समझ पाता जिन्हें परमेश्वर का आत्मा वचन के माध्यम से बताता है। आत्मा की बातों को ग्रहण करने के लिए आत्मिक विवेक (या आत्मिक अंतर्दृष्टि) की आवश्यकता होती है। यहीं पर मानवीय बुद्धि की योग्यता समाप्त होती है और पवित्र आत्मा के कार्य पर निर्भरता शुरू होती है।

1 कुरिन्थियों 2:9-12

9 परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।

10 परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।
11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है। वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।
12 परन्तु हमने संसार का आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं,

परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा के आत्मिक सत्य और वास्तविकताओं को हम पर प्रकट करता है (उजागर करता है, ढक्कन हटा देता है)। इससे हम उन बातों को जानने (समझने, निश्चित होने, देखने, महसूस करने) में सक्षम हो जाते हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें बिनामूल्य दिया है।

पवित्र आत्मा प्रकाशन का आत्मा है। वह हमें पवित्र शास्त्र में समाहित परमेश्वरीय सच्चाइयों को देखने हेतु सक्षम बनाता है। वह हमें वचनों के अर्थ से परे ले जाता है जो पुराने समय के लोगों ने लिखे थे, और परमेश्वर द्वारा व्यक्त किए गए मूल विचारों की ओर हमें ले जाता है। मनुष्य के विचारों और परमेश्वर के विचारों के बीच एक बड़ा अंतर है। प्रभु ने कहा, *"क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है"* (यशायाह 55:9)।

बौद्धिक समझ से आत्मिक समझ की ओर आगे बढ़ना प्रकाशन है। प्रकाशन के माध्यम से हम आत्मिक सत्य को समझते हैं। जब व्यक्ति आत्मिक सत्य का प्रकाशन नहीं प्राप्त करता (अर्थात, वचन की आत्मिक समझ नहीं पाता), तब यीशु ने कहा, *"जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे 'वह दुष्ट' आकर छीन ले जाता है"* (मत्ती 13:19)।

प्रकाशन के लिए प्रार्थना करना

इफिसियों 1:17-19
17 कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें
अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे;
18 और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों, कि तुम जान लो कि उसके
बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की
महिमा का धन कैसा है,
19 और उसकी सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है,
उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार,

इफिसुस के विश्वासियों के लिए पौलुस अपनी प्रार्थना में, विशिष्ट तौर पर ज्ञान और प्रकाश का आत्मा मांगता है, और विनती करता है कि उनकी समझ को प्रकाश (प्रकाशन) प्राप्त हो ताकि वे परमेश्वर को जानें, परमेश्वर की बुलाहट के उद्देश्य को जानें, उस महिमामय मीरास या विरासत को जानें जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए रखी है, और उस सामर्थ की महानता को जानें जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए उपलब्ध की है। इसलिए, ऐसे आत्मिक सत्य का ज्ञान और समझ पवित्र आत्मा के प्रकाशन और प्रबोधन से प्राप्त होते हैं। पवित्र आत्मा हमारी समझ की आंखों को प्रकाशित करता है, ताकि हम आत्मिक सत्य को जान सकें।

जब, प्रकाशन की प्रक्रिया के माध्यम से हम आत्मिक समझ प्राप्त करते हैं, तब हम स्वाभाविक बुद्धि ज्ञान से हमारी आत्माओं में जानने की ओर बढ़ते हैं। स्वाभाविक ज्ञान और आत्मिक ज्ञान, दिमागी ज्ञान और हृदय के ज्ञान के बीच यही अंतर है। जब हम किसी बात को अपने हृदयों (आत्माओं) में जानते हैं, तो इसका मतलब यह है कि हमारे हृदय की आंखें समझ पाने के लिए प्रकाशित हुई हैं। इसलिए, हम अंतरात्मा की गहराई से उसे जानते और विश्वास करते हैं। हम आत्मिक सत्य को अपनाते हैं और उस पर विश्वास करते हैं, और उसे अनुभव करते हैं।

इसलिए, जब हम वचन को पढ़ते और सुनते हैं, तो हमें आत्मिक सत्य के प्रकाशन और समझ के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। जब हम वचन का प्रकाशन पाते हैं और उस पर विश्वास करते हैं, तब शैतान उस वचन को हमसे चुरा नहीं सकता या छीन नहीं सकता। हम उसे देखते हैं। हम उस पर विश्वास करते हैं। वह अब हमारा हो गया!

9
फसल को रोकने वालेः वचन का विरोध

मत्ती 13:20,21
[20] और जो बीज पथरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है।
[21] परंतु अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है।

मरकुस 4:16,17
[16] और वैसे ही जो पथरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे हैं कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं,
[17] परन्तु अपने भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही दिनों के लिए रहते हैं; इसके बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।

लूका 8:13
चट्टान पर के वे हैं, कि जब सुनते हैं, तो आनन्द से वचन को ग्रहण तो करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ने से वे थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं, और परीक्षा के समय बहक जाते हैं।

अब हम इस बात का परीक्षण करते हैं जिसकी ओर यीशु ने उन कारकों के रूप में संकेत किया जो बीज को फल लाने से रोकते हैं। बीज में कुछ भी गलत नहीं है। यह बीज परमेश्वर का वचन है और इसलिए यह परिपूर्ण है। परंतु कुछ बाहरी कारक भी हैं जो वचन के बीज को फल लाने से रोकते हैं।

यीशु ने कहा कि बाहरी कारकों का एक समूह जो फसल को रोक सकता था, वह है वचन के कारण क्लेश या सताव, और परीक्षा का समय।

वचन के विरोध के बावजूद स्थिर रहें

जब हम परमेश्वर के वचन को सुनेंगे और ग्रहण करेंगे, तब परमेश्वर के वचन के कारण क्लेश (विपत्ति, दबाव), सताव (मनुष्यों द्वारा विरोध), और परीक्षा (मुश्किलें, पाप का मोह) आएगी। ये विरोध अक्सर उन क्षेत्रों में आते हैं जहां हम परमेश्वर के वचन को सुनते और ग्रहण करते हैं। कभी-कभी शैतान के प्रलोभन संदेह, प्रश्न को उकसाते हैं और वचन के सत्य से दूर करके भय और अविश्वास के स्थान में ले जाने का प्रयास करते हैं। विरोध का स्वरूप और स्रोत चाहे जो हो, हमें वचन के विश्वास में दृढ़ रहना है जो हमने प्राप्त किया है। हमें वचन को थामे रहना है और उसे मौका देना है कि हमारे हृदयों में जड़ पकड़े ताकि वह अपने जीवनों में फल ला सकें।

उदाहरण के तौर पर, हम यह कहें कि हम दिव्य चंगाई पर वचन सुनते हैं। ईश्वरीय चंगाई का प्रकाशन हमें आनंद और बड़े उत्साह से भर देता है। उसके बाद तुरंत, हम किसी तरह की बीमारी का सामना करते हैं। हम क्या करेंगे? क्या हम ईश्वरीय चंगाई के वचन को यह कहकर दूर करेंगे, "यह सबके लिए नहीं है," या "शायद ईश्वरीय चंगाई केवल प्रारंभिक कलीसिया के लिए थी और आज के लिए नहीं है," या कुछ ऐसे ही विवाद या क्या हम जानबूझकर वापस वचन में जाते हैं, उसे फिर पढ़ते हैं, उसे फिर सुनते हैं, उस पर मनन करते हैं, और अपनी आत्माओं को ईश्वरीय चंगाई के वचन से भर देते हैं? यह दूसरी बात करना अधिक महत्वपूर्ण है, ताकि जो वचन हमने ईश्वरीय चंगाई के बारे में सुना है हमारे अंदर गहराई से प्रवेश कर सके।

वचन को आपके अंदर जड़ पकड़ने दें

हम बड़े उत्साह, आनंद और जोश के साथ वचन को ग्रहण करते हैं। परंतु, सच्ची परीक्षा यह है कि क्या हम समय के साथ सत्य के साथ बने रहेंगे ताकि वचन वास्तव में *"जड़ पकड़ सके,"* अर्थात हमारे हृदयों में

गहराई से प्रवेश कर सके और हमारे अंदर मज़बूती से बने रह सके। यदि हमारे अंदर वचन की गहरी जड़ें नहीं हैं, तो हम लड़खड़ा सकते हैं (ठोकर खा सकते हैं) और गिर सकते हैं (वचन से दूर हो सकते हैं)।

हमारे अंदर वचन गहरी जड़ पाए इसलिए हमें लगातार परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना है और परमेश्वर के वचन के हमारे प्रकाशन को मज़बूत करना है। यह हमें तब करना है जब समय अच्छा हो, और वचन के लिए कोई सच्चा विरोध न हो। सामान्य तौर पर, हम में यह प्रवृत्ति होती है कि जब हम उसी संदेश को बार-बार सुनते हैं, एक ही वचन हमें बार-बार सुनाया जाता है, तो हम उकता जाते हैं। लेकिन हमें वचन को सुनना है और सुनते रहना है, ताकि वह हमारे अंदर जड़ पकड़ सके और जब हमें वचन के विरोध का सामना करना पड़ता है तब हम स्थिर रह सकें। जैसा कि इब्रानियों 2:1 में बताया है, *"हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं और भी मन लगाएं।"*

अपनी आत्मा को लगातार सत्य और प्रकाशन से जो आपने प्राप्त किया है भरते जाएं ताकि वह आपके अंदर गहराई से जड़ पकड़ सके। इससे यह सुनिश्चित हो जाएगा कि आप मुश्किल समयों में उसे छोड़ नहीं देंगे।

10
फसल को रोकने वालेः कांटे जो वचन को दबा देते हैं

मत्ती 13:22
जो बीज झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, परंतु इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता।

मरकुस 4:18,19
18 और जो झाड़ियों में बोए गए, ये वे हैं जो वचन सुनते हैं,
19 और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और अन्य वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दबा देता है, और वह निष्फल रह जाता है।

लूका 8:14
जो झाड़ियों में गिरे वह वे हैं, जो सुनते हैं, पर बड़े होते होते चिन्ता और धन और जीवन के सुख विलास में फंस जाते हैं, और उनका फल नहीं पकता।

फसल को रोकने वाली अन्य बातें जिनकी ओर यीशु ने संकेत किया, वे हैं कंटीली झाड़ियां जो वचन को दबा देती हैं। कंटीली झाड़ियां इस संसार की चिंताओं, धन का धोखा, अन्य वस्तुओं की और जीवन के सुखविलासों की चाह हैं। इन सारी बातों का जो सामान्य परिणाम होता है, वह है ध्यान बंट जाना। वे हमारे लक्ष्य और ध्यान को परमेश्वर की ओर से हटाकर दूसरी बातों पर लगाते हैं। इसलिए, ये कंटीली झाड़ियों के समान काम करते हैं जो पर्याप्त रोशनी, पानी और पोषक तत्वों को छोटे पौधे तक पहुंचने से रोकती हैं और इस तरह अंत में उसे नाश कर देती हैं। यही हमारे साथ भी होता है। हमारा ध्यान बंट जाता है और हम अन्य बातों में व्यस्त हो जाते हैं और हम अपने हृदयों में

वचन की रक्षा करने और उसका पोषण करने को अनदेखा करते हैं। अंत में वचन हमारे जीवन में निष्फल हो जाता है।

वचन को दबाने वाली कंटीली झाड़ियों के विरोध में रक्षा करें

हमें अपने हृदयों की संसार की चिंताओं, धन का धोखा, अन्य वस्तुओं की और जीवन के सुखविलासों की चाह से रक्षा करना है। हम सबके जीवन में चिंताएं हैं (दायित्व जो हमें पूरा करना हैं), हम धन (पैसा, दौलत) के साथ लेनदेन करते हैं, हमें दूसरे शौक हैं, और उचित सुखों (सही बातों) का हम आनंद उठाते हैं, लेकिन हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे हृदय इन बातों के द्वारा परमेश्वर से, उसके वचन से दूर न हों।

यहां पर कंटीली झाड़ियों के विरोध में रक्षा करने की कुछ रीतियाँ हैं.

1) परमेश्वर और उसके वचन के लिए अपने प्रेम की पुष्टि करें

2) स्वयं के हृदय की रक्षा करें

परमेश्वर और उसके वचन के लिए अपने प्रेम की पुष्टि करें

परमेश्वर और उसके वचन के लिए अपने प्रेम और आवेश की पुष्टि करना अद्त बात है जैसा कि भजन के लेखक ने भजन संहिता 118 में किया है।

यहां पर उस भजन से कुछ चुनिंदा वचन लिए हुए हैं जो हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर के वचन के लिए अपने प्रेम की पुष्टि कैसे करें।

भजन संहिता 119:16,36,37,47,72,97,127,162
16 मैं तेरी विधियों से सुख पाऊंगा; और तेरे वचन को न भुलूंगा।
36 मेरे मन को लोभ की ओर नहीं, अपनी चितौनियों ही की ओर फेर दे।

37 मेरी आँखों को व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे; तू अपने मार्ग में मुझे जिला।
47 क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूं, और मैं उनमें प्रीति रखता हूं।
72 तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिये हजारों रुपयों और मुहरों से भी उत्तम है।।
97 अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।
127 इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से वरन् कुन्दन से भी अधिक प्रिय मानता हूं।
162 जैसे कोई बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है, वैसे ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूं।

स्वयं के हृदय की रक्षा करें

हमें लगातार अपने हृदय के लगाव और आवेशों पर ध्यान देना है। हमारी दिलचस्पी कहां है, हमारे शौक क्या हैं इसकी हमें हमेशा जांच करनी है। जब हमें लगता है कि हमारा ध्यान बंट रहा है या हम अपने पहले प्यार से दूर हो रहे हैं, तो हमें उसे करना है और प्रभु से विनती करना है कि हमारे हृदयों को पुनः निर्दिष्ट करें और हमें वापस अपनी ओर लाए। हम जानबूझकर और व्यवहारिक तौर पर परमेश्वर की खोज कर उसे अपने जीवन में प्रथम स्थान देते हैं (मत्ती 6:33)। परमेश्वर की उपस्थिति में आराधना, प्रार्थना और उसके वचन में परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए समय और स्थान निश्चित करें। *"अन्धेर करने पर भरोसा मत रखो, और लूट पाट करने पर मत फूलो; चाहे धन सम्पत्ति बढ़े, तौभी उस पर मन न लगाना।"* (भजन संहिता 62:10अ)।

11
तीन कुंजियांः समझना, ग्रहण करना, बनाए रखना

प्रभु यीशु ने हम पर प्रकट किया कि परमेश्वर के वचन को अंततः हमारे जीवनों में फल लाने के लिए कौन सी बात कारण होती है। तीनों सुसमाचार इसे कैसे लिखते हैं, इसे हम सीखते हैं कि जब हम वचन को समझेंगे (मत्ती 13:23), ग्रहण करेंगे (मरकुस 4:20) और अपने हृदयों में बनाए रखेंगे (लूका 8:15), तो हम हमारे जीवनों में फल लाएंगे।

समझना

मत्ती 13:23
जो बीज अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।

हमने पिछले अध्याय में आत्मिक सत्य को समझने और प्रकाशन पाने के महत्व को समझा। हमारे हृदयों में आत्मिक सत्य का खोला जाना क्रमिक है। जैसे-जैसे हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा के द्वारा और प्रकाश डाला जाता है, हम आत्मिक सत्य को क्रमशः और स्पष्ट रूप से देखते हैं। हमें सत्य के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रकाशन पाना जारी रखना है। हमें निरंतर हमारे प्रभु के ज्ञान में बढ़ते जाना है (कुलुस्सियों 1:10), अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ना है (2 पतरस 3:18), हमारे ज्ञान में नया बनते जाना है (कुलुस्सियों 3:10), मसीह के प्रेम को जानना और समझना है (इफिसियों 3:18,19) और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान के निकट आना है (इफिसियों 4:13)। हमारा आत्मिक सफर हमारे परमेश्वर के प्रकाशन,

उसके उद्देश्यों, उसके पास हमारे लिए जो मीरास है, उस सामर्थ में जो उसने हमारे लिए उपलब्ध की है, उसमें एक निरंतर उन्नति है।

इसलिए, वचन को सुनते रहें। उस पर मनन करते रहें। पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते रहें। मसीही विश्वास और यात्रा के सभी क्षेत्रों में ताज़ा प्रकाशन और अंतर्दृष्टि प्राप्त करते रहें। भजन के लेखक के समान, हम निरंतर प्रार्थना करते हैं, *"मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देख सकूं"* (भजन संहिता 119:18)।

प्राप्त करें

मरकुस 4:20
और जो अच्छी भूमि में बोए गए, ये वे हैं, जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं, कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई सौ गुणा।

हमें वचन को ग्रहण करना है, स्वीकार करना है, और अपनाना है, अर्थात अपने हृदयों से उस पर विश्वास करना है। हमें वचन पर संपूर्ण हृदय से विश्वास करना है ताकि वह अपने हृदयों और जीवनों में कार्य कर सके। इब्रानियों 4:2 हमें बताता है, *"क्योंकि हमें उन्हीं के समान सुसमाचार सुनाया गया है, परंतु सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुनने वालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा।"* जब हम वचन के साथ विश्वास को मिलाने में विफल रह जाते हैं (वचन पर विश्वास करने में) तब वचन हमें लाभ नहीं देगा। दूसरी ओर, जब हम वचन पर विश्वास करेंगे, तब हम उसे फल लाता हुआ और हमारे जीवनों में पूरा होता हुआ देखेंगे। *"और धन्य है वह जिसने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उससे कही गई, वे पूरी होंगी"* (लूका 1:45)।

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, शैतान और उसकी दुष्टात्माएं संदेह, अविश्वास, डर आदि के द्वारा हमें वचन पर विश्वास से

करने से रोकने का प्रयास करती हैं। परंतु हमें विश्वास में मज़बूत रहना है। वचन पर विश्वास करते रहें। उसका वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17)।

बनाए रखें

लूका 8:15
परंतु अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं।

उपर्युक्त वचन में "संभाले रहते हैं," यह शब्द ग्रीक से है, जिसमें मज़बूती से थामे रहने, बनाए रखने, पर बने रहने, से चिपके रहने, और लिपटे रहने की कल्पना है। इस तरह, हमें सारी बातों में और समय के साथ धीरज के साथ वचन को थामे रहना है। यही वचन हमारे जीवनों में फल लाएगा।

यदि हम चाहते हैं कि वचन हमारे जीवन में फल लाए, तो ये तीन कुंजियां वचन को समझना, वचन को ग्रहण करना, और वचन को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आरंभ में, जब हम वचन पर मनन करते हैं, और वचन को ग्रहण करते हैं, तो हम देखते हैं कि वह छोटे पैमाने में फल लाता है (तीस गुना)। हमें इसमें बने रहना है और वचन के साथ बने रहना है। प्रकाशन प्राप्त करते रहें, वचन पर विश्वास करते रहें, और वचन को हमारे जीवनों में बनाए रखें। शीघ्र ही हम वचन के बढ़ते हुए पैमाने को, साठ गुना और सौ गुना फल लाते हुए देखेंगे।

वचन पर चलते रहें

याकूब 1:22,25
22 परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं, जो अपने आप को धोखा देते हैं।
25 परंतु जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि

अंत में, परमेश्वर के वचन का प्रकाशन प्राप्त करने का मकसद यह है कि हमारे मनों का नवीकरण हो सके, और हमारे जीवन का तरीका बदल जाए (रोमियों 12:2)। जो आत्मिक सच्चाइयां हम पर प्रकट की गई हैं, वे हमारे विचार को प्रभावित करने पाएं। हमारे विचारों का ढंग, हमारा तर्क और हमारी धारणाएं हमारे द्वारा प्राप्त आत्मिक समझ से प्रभावित होने पाएं और सुनियोजित किए जाएं। इस प्रक्रिया को "मन या बुद्धि का नवीकरण" कहते हैं। जब ऐसा होता है, तब हम सुसंगत रूप से उस प्रकाशन के अनुसार जीवन बिताते हैं जो परमेश्वर के वचन से हमने प्राप्त किया है। हमें वचन के मानने वाले बनना है और हम उस सत्य के अनुसार जीएं जो हमने प्राप्त किया है। जब हम वचन के अनुसार चलेंगे, तब हम उन आशीषों में चलेंगे जिनका वायदा वचन में किया गया है।

हमें पवित्र शास्त्र देने का परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि हम लगातार उनके अनुसार जीवन बिताएं। उसने हमारे लिए अपना आत्मा उपलब्ध कराया है ताकि हमें उसके वचन को समझने में सहायता प्राप्त हो सके। परंतु, वचन का प्रकाशन पाना उसके वायदों की पूर्ण आशीषों को अनुभव करने के लिए काफी नहीं है। व्यक्ति ही है जो प्रकाशन को सुसंगत कार्य में बदल देता है, जो परमेश्वर द्वारा वायदा किए गए बहुतायत के धन में चलता है।

आपको हमारी चुनौती यह है कि आप पवित्र शास्त्र से अंतर्दृष्टि पाने के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें। उसके बाद, आपके द्वारा प्राप्त प्रकाशन के द्वारा अपने मन को नवीनीकृत होने का मौका दें। और उसके बाद प्रकाशन को आपके प्रतिदिन के जीवन के अनुशासित कार्य में बदल दें। तब आप ऐसे व्यक्ति बनेंगे जो आपके द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य में आशीषित होगा, जैसा पवित्र शास्त्र में लिखा है।

बने रहने वाला वचन

प्रेरित यूहन्ना वचन को हमारे अंदर बनाए रखने और हमें उसमें बनाए रखने के महत्व के बारे में लिखता है और हम उसके वचन में बने रहते हैं। "बने रहने" का अर्थ है, "रहना, वास करना, बने रहना, जारी रहना।" इसका संबंध उसके वचन को थामे रहने से और समय के साथ उस वचन के द्वारा जीवित रहने से है। उसका संबंध उसके वचन को थामे रहने से और समय के साथ उस वचन के अनुसार सुसंगत तरीके से चलने से है। यीशु ने हमें सिखाया कि जब हम उसके वचन में बने रहते हैं, तो यह उसके शिष्य होने की अभिव्यक्ति है। ऐसा करने से हम सत्य की ओर बढ़ेंगे जो हमें स्वतंत्र करेगा और हमें बदल देगा (यूहन्ना 8:31,32)। उसके वचन में बने रहना उसके प्रति हमारे प्रेम की अभिव्यक्ति है। जो उसके वचन का पालन करता है उस व्यक्ति पर वह अपने आपको और अधिकाई से प्रकट करेगा। जब हम उसके वचन में बने रहेंगे, तब हम उसकी उपस्थिति को अनुभव करेंगे (यूहन्ना 14:21,23)। उसमें बने रहना और उसका वचन हम में बना रहे यही उत्तरित प्रार्थना की कुंजी है। यीशु ने कहा, *"यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुममें बनी रहें तो जो चाहो मांगो, और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा"* (यूहन्ना 15:7)। उसी तरह, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, उसके स्थाई वचन के द्वारा हम शैतान पर विजय के साथ जीवन बिताते हैं। *"हे जवानो, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि तुम बलवन्त हो, और परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है, और तुमने उस दुष्ट पर जय पाई है"* (1 यूहन्ना 2:14)।

आप परमेश्वर के बाग हैं

अंत में, हम खुद को, हम में से हर एक को परमेश्वर के बाग के रूप में देख सकते हैं। परमेश्वर ने हमें उसका वचन दिया है—चमत्कारी बीज—कि वह चाहता है कि हमारे हृदयों में और जीवन में बोया जाए।

आशीष, चंगाई, समृद्धि, शांति, प्रेम, पवित्रता, शुद्धता, सामर्थ और बहुत कुछ, जो हमारे जीवनों में इन बातों का निर्माण कर सकते हैं। काश कि हम वचन के बीज को अपने हृदयों में और जीवनों में बोने के अनुशासन को विकसित करें! हम परमेश्वर को उसके वचन की सामर्थ के माध्यम से अपने जीवन में अपने उद्देश्य और आनंद को पूरा करने की अनुमति दें!

12
शब्द के बीज

यह एक ही विषय / विषय वस्तु पर पवित्र शास्त्र के वचनों का संग्रह है। आप इनमें और वचनों को जोड़ सकते हैं और आप उन विषयों / विषयवस्तुओं पर पवित्र शास्त्र के वचनों को इकट्ठा कर सकते हैं जो आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। आवश्यकता पड़ने पर त्वरित संदर्भ के रूप में उनका उपयोग करें। अक्सर परमेश्वर के वचन में ध्यान करें।

दिव्य संरक्षण

● भजन संहिता 34:7; ● भजन संहिता 91:11,12; ● भजन संहिता 103:20; ● दानिय्येल 6:22; ● मत्ती 18:10; ● लूका 22:41-43; ● प्रेरितों के काम 5:19,20; ● प्रेरितों के काम 8:26; ● प्रेरितों के काम 12:7-11; ● प्रेरितों के काम 27:23,24; ● इब्रानियों 1:14

अभिषेक

● निर्गमन 30:25-33; ● 1 शमूएल 24:6; ● 1 इतिहास 16:21,22; ● भजन संहिता 28:8; भजन संहिता 45:7; भजन संहिता 92:10; ● यशायाह 10:27; यशायाह 61:1-3; ● मीका 3:8; ● जकर्याह 4:6,7; ● मत्ती 12:28; ● लूका 1:35; लूका 4:18,19; लूका 4:14; लूका 5:17; लूका 6:19; लूका 8:43-48; लूका 24:49; ● यूहन्ना 7:37-39; ● प्रेरितों के काम 1:8; प्रेरितों के काम 4:33; प्रेरितों के काम 5:12-16; प्रेरितों के काम 6:8; प्रेरितों के काम 10:38; ● रोमियों 1:3,4; रोमियों 15:13; रोमियों 15:18,19; ● 1 कुरिन्थियों 2:4,5; 1 कुरिन्थियों 5:4; ● 2 कुरिन्थियों 1:21,22; ● इफिसियों 1:19,20; इफिसियों 3:16,20,21; ● 1 थिस्सलुनीकियों 1:5; ● 2 तीमुथियुस 1:7; ●इब्रानियों 2:3,4; ● 1 यूहन्ना 2:20,27

प्रार्थना का उत्तर

● भजन संहिता 37:4; भजन संहिता 65:2; भजन संहिता 84:11; ● नीतिवचन 10:24; नीतिवचन 15:29ब; ● मत्ती 7:7-11; मत्ती 18:18-20; मत्ती 21:22; ● मरकुस 11:22-24; ● लूका 18:1; ● यूहन्ना 14:13,14; यूहन्ना 15:7; यूहन्ना 16:23,24; ● फिलिप्पियों 4:6,7; ● याकूब 1:5-7; याकूब 5:14-16; ● 1 पतरस 3:12; ● 1 यूहन्ना 3:21,22; 1 यूहन्ना 5:14,15

परमेश्वर के शस्त्र

● रोमियों 13:12-14; ● 2 कुरिन्थियों 6:3-7; 2 कुरिन्थियों 10:3-5; ● इफिसियों 6:10-18; ● 1 तीमुथियुस 1:18

गर्भ में बच्चा

● उत्पत्ति 20:17,18; ● निर्गमन 23:25,26; ● व्यवस्थाविवरण 7:12-15; व्यवस्थाविवरण 28:4; ● अय्यूब 31:15; ● भजन संहिता 8:2; भजन संहिता 71:5-7; भजन संहिता 113:9; भजन संहिता 119:73; भजन संहिता 138:8; भजन संहिता 139:13-17; ● यशायाह 66:9; ● यिर्मयाह 1:5; ● गलातियों 1:15,16

विश्वासी का अधिकार

● मत्ती 10:1,7,8; मत्ती 16:18,19; मत्ती 28:18-20; ● मरकुस 3:14,15; मरकुस 9:38-40; मरकुस 16:17,18; ● लूका 10:17-20; ● प्रेरितों के काम 3:6-9,16; प्रेरितों के काम 4:9,10; प्रेरितों के काम 16:16-18; ● इफिसियों 2:4-6; ● फिलिप्पियों 2:9-11

आशीष और आशीषित होना

● उत्पत्ति 12:1-3; उत्पत्ति 17:7; उत्पत्ति 22:17,18; उत्पत्ति 24:1,35; उत्पत्ति 26:12-14; ● गिनती 6:23-27; ● व्यवस्थाविवरण 28:1-

14; ● भजन संहिता 103:1-6; भजन संहिता 112:1-10; भजन संहिता 128:1-6; ● नीतिवचन 10:22; ● गलातियों 3:9,13,14,29; ● इफिसियों 1:3; इब्रानियों 8:6

यीशु का लहू

● निर्गमन 12:13,23; निर्गमन 24:8; ● लैव्यव्यवस्था 17:11; ● जकर्याह 9:11; ● मत्ती 26:28; ● प्रेरितों के काम 20:28; ● रोमियों 3:24-26; रोमियों 5:9; ● 1 कुरिन्थियों 5:7; 1 कुरिन्थियों 10:16; ● इफिसियों 1:7; इफिसियों 2:13; ● कुलस्सियों 1:14,20-22; कुलस्सियों 2:14,15; ● इब्रानियों 2:14,15; इब्रानियों 9:12-14; इब्रानियों 10:19-22; इब्रानियों 10:28,29; इब्रानियों 12:22-24; इब्रानियों 13:12,20,21; ●1 पतरस 1:1,2,18,19; ● 1 यूहन्ना 1:7; ● प्रकाशितवाक्य 1:5,6; प्रकाशितवाक्य 5:9,10; प्रकाशितवाक्य 7:14,15; ● प्रकाशितवाक्य 12:10-11

साहसी

● भजन संहिता 138:3; ● नीतिवचन 28:1; ● प्रेरितों के काम 4:13,29-31; प्रेरितों के काम 14:3; ● 2 कुरिन्थियों 3:11,12; ● फिलिप्पियों 1:20; ● 2 तीमुथियुस 1:7; ● 1 यूहन्ना 4:17,18 (साहस, आत्मविश्वास भी देखें)

अस्थियाँ (हड्डियाँ)

● भजन संहिता 34:20; ● नीतिवचन 3:5-8; नीतिवचन 14:30; नीतिवचन 17:22; ● यशायाह 58:11

दुष्टात्माओं को निकालना

● मत्ती 4:23,24; मत्ती 8:16,17; मत्ती 9:32,33; मत्ती 10:1,7,8; मत्ती 12:28,29; मत्ती 17:18-21; ● मरकुस 3:14,15; मरकुस 6:7,12,13; मरकुस 9:38-40; मरकुस 16:17,18; ● लूका 9:1,2; लूका 10:17-

20; लूका 13:10-13; ● यूहन्ना 14:12; ● प्रेरितों के काम 16:16-18; प्रेरितों के काम 19:11-12

बच्चे

● व्यवस्थाविवरण 4:9; व्यवस्थाविवरण 6:4-7; व्यवस्थाविवरण 28:4; व्यवस्थाविवरण 30:6; ● भजन संहिता 25:12,13; भजन संहिता 37:25,26; भजन संहिता 78:4-6; भजन संहिता 90:16; भजन संहिता 103:17; भजन संहिता 112:1,2; भजन संहिता 113:9; भजन संहिता 127:1-5; ● नीतिवचन 13:22; नीतिवचन 14:26; नीतिवचन 20:7; नीतिवचन 22:6; नीतिवचन 31:28; ● यशायाह 8:18; यशायाह 44:3,4; यशायाह 49:25; यशायाह 54:13; यशायाह 59:21; ● मलाकी 4:5,6; ● लूका 1:17; ● इफिसियों 6:4; ● कुलस्सियों 3:21; ● 1 तीमुथियुस 3:4,5; 1 तीमुथियुस 3:12; ● 2 तीमुथियुस 1:5; 2 तीमुथियुस 3:15; ● 3 यूहन्ना 1:4

आत्मविश्वास

● भजन संहिता 65:5; भजन संहिता 118:8; भजन संहिता 118:9; ● नीतिवचन 3:26; नीतिवचन 14:26 (यह भी देखें: साहस, साहस)

साहस

● व्यवस्थाविवरण 31:6; ● यहोशू 1:7,9; ● 2 इतिहास 32:7; ● भजन संहिता 27:14 (यह भी देखें: साहस, आत्मविश्वास)

ऋण रद्द करना

● व्यवस्थाविवरण 15:6; व्यवस्थाविवरण 28:8,11,12; ● 2 राजा 4:1-7; ● भजन संहिता 128:1,2; ● नीतिवचन 3:9,10; नीतिवचन 22:7; ● यशायाह 65:22; ● मलाकी 3:10,11; ● मत्ती 17:24-27; ● मरकुस 11:22,23; ● लूका 5:4-7; ● रोमियों 2:11; रोमियों 13:8

छुटकारा

● भजन संहिता 18:1,2,17,19,43,48,50; भजन संहिता 32:7; भजन संहिता 34:4,7,17,19; भजन संहिता 91:3,14,15; भजन संहिता 107:20; भजन संहिता 116:8; ● मत्ती 6:13; ● कुलस्सियों 1:12,13; ● गलातियों 1:4; 2 ● तीमुथियुस 4:18; ● 2 पतरस 2:9

महान कार्य

● यहोशू 1:5; ● भजन संहिता 60:12; ● यशायाह 45:1-3; ● दानिय्येल 11:32ब; ● 1 कुरिन्थियों 2:9,10; ● इफिसियों 2:10; ● इफिसियों 3:20,21; ● फिलिप्पियों 1:6; फिलिप्पियों 2:13; ● इब्रानियों 11:33,34

विश्वास

● मत्ती 9:28,29; मत्ती 17:20; मत्ती 21:21; ● मरकुस 9:23; मरकुस 11:22,23; ● लूका 1:45; लूका 17:5,6; ● यूहन्ना 11:40; ● प्रेरितों के काम 3:16; प्रेरितों के काम 6:8; प्ररितों के काम 27:25; ● रोमियों 4:12,17-21; रोमियों 10:8-10; रोमियों 12:3; ● 2 कुरिन्थियों 4:13; 2 कुरिन्थियों 5:7; ● गलातियों 5:6; ● इफिसियों 6:16; ● 2 थिस्सलुनीकियों 1:3,11; ● 1 तीमुथियुस 6:12; ● फिलेमोन 1:6; ● इब्रानियों 3:1; इब्रानियों 4:2,14; इब्रानियों 6:12; इब्रानियों 10:22,23,35,36; ● याकूब 1:5-7; याकूब 2:17,18,21,22,26

कृपा और अच्छे संबंध

● उत्पत्ति 39:2-4,21; ● निर्गमन 12:36; ●1 इतिहास 29:12; ● भजन संहिता 5:12; भजन संहिता 30:5; भजन संहिता 119:74; ● नीतिवचन 3:3,4; नीतिवचन 4:7,8; नीतिवचन 12:2; नीतिवचन 16:7; नीतिवचन 22:4; नीतिवचन 29:23; ● यशायाह 61:7; ● 1 तीमुथियुस 4:1

भविष्य

● भजन संहिता 31:15; भजन संहिता 71:6,7,17,18; भजन संहिता 138:8; ● नीतिवचन 3:5,6; नीतिवचन 4:18; ● यशायाह 46:3,4; यशायाह 64:8; ● यिर्मयाह 29:11; ● मत्ती 6:25-34; ● रोमियों 8:28; ● 1 कुरिन्थियों 2:9,10; ● इफिसियों 2:10; ● फिलिप्पियों 3:12-14; फिलिप्पियों 4:6,7

आत्मा के वरदान

● प्रेरितों के काम 2:22,43; प्रेरितों के काम 5:12-16; प्रेरितों के काम 6:8; प्रेरितों के काम 7:36; प्रेरितों के काम 14:3; ● रोमियों 12:6; रोमियों 15:18,19; ● 1 कुरिन्थियों 2:4,5; 1 कुरिन्थियों 4:20; 1 कुरिन्थियों 12:1-11,31; 1 कुरिन्थियों 14:1,3,12,26,31,39; ● 2 कुरिन्थियों 12:12; ● 1 थिस्सलुनीकियों 1:5; ● इब्रानियों 2:3,4

परमेश्वर की महिमा

● निर्गमन 24:16,17; निर्गमन 29:43; निर्गमन 33:18,19; निर्गमन 40:33-35; ● गिनती 9:15-23; गिनती 14:21; ● व्यवस्थाविवरण 5:24; ● 1 शमूएल 4:21,22; ● 1 राजा 8:10,11; ● 2 इतिहास 5:13,14; ● भजन संहिता 24:7-10; भजन संहिता 26:8; भजन संहिता 63:1,2; भजन संहिता 85:9; भजन संहिता 90:16,17; ● यशायाह 4:5,6; यशायाह 11:10; यशायाह 35:1,2; यशायाह 40:5; यशायाह 42:8; यशायाह 48:11; यशायाह 58:8; यशायाह 60:1-7; ● यहेजकेल 1:28; यहेजकेल 3:12; यहेजकेल 10:4,18; ● हबक्कूक 2:14; हबक्कूक 3:3,4; ● हाग्गै 2:7-9; ● यूहन्ना 1:14; यूहन्ना 2:11; यूहन्ना 11:4,40; यूहन्ना 14:21-23; यूहन्ना 17:5,22,24; ● प्रेरितों के काम 7:55; ● रोमियों 8:15-25; ● 1 कुरिन्थियों 3:16; 1 कुरिन्थियों 10:31; ● 2 कुरिन्थियों 3:7-18; 2 कुरिन्थियों 4:6,7,-18; ● इफिसियों 2:21,22; ● कुलस्सियों 1:26,27; ● इब्रानियों 1:3;

● 1 पतरस 4:14; ● 2 पतरस 1:16-18

ईश्वरीय इच्छा

● भजन संहिता 27:4; भजन संहिता 37:4; भजन संहिता 42:1,2; भजन संहिता 84:1-3,10; भजन संहिता 63:1-8; भजन संहिता 145:19; ● नीतिवचन 10:24; ● यशायाह 26:9; ● मत्ती 6:33; ● मरकुस 12:29-31; ● रोमियों 8:13; ● 2 कुरिन्थियों 5:14,15; ● गलातियों 2:20; गलातियों 5:24; गलातियों 6:7,8; गलातियों 6:14; ● फिलिप्पियों 3:7-11; फिलिप्पियों 4:8; ● कुलुस्सियों 3:1-3; ● 2 तीमुथियुस 2:19-21; ● याकूब 4:4; ● 1 यूहन्ना 2:15-17

हमारे परमेश्वर की महानता

● भजन संहिता 86:8-12; भजन संहिता 121:2; भजन संहिता 145:1-21; भजन संहिता 147:475; ● यशायाह 37:16; यशायाह 40:21-31; यशायाह 45:12,18; ● यिर्मयाह 32:17,27; यिर्मयाह 51:15; ● रोमियों 11:33-36; ●1 तीमुथियुस 6:14-16; ● प्रकाशितवाक्य 5:11-14; प्रकाशितवाक्य 7:9-12; प्रकाशितवाक्य 19:4-6

दिशा-निर्देश

● भजन संहिता 25:12; भजन संहिता 32:8,9; भजन संहिता 37:23,24; भजन संहिता 119:103-105,130,133; ● नीतिवचन 3:5,6; नीतिवचन 4:18,26; ● यशायाह 58:11; ● रोमियों 8:14; ● कुलस्सियों 3:15

चंगाई और स्वास्थ्य

●उत्पत्ति 20:17; ●निर्गमन 15:26; निर्गमन 23:25,26; ●व्यवस्थाविवरण 7:15; ●अय्यूब 33:19-28; ●भजन संहिता 30:2; भजन संहिता 41:1-3; भजन संहिता 91:5-10; भजन संहिता

103:1-5; भजन संहिता 107:20; ●नीतिवचन 3:7,8; नीतिवचन 4:20-22; नीतिवचन 12:18; नीतिवचन 18:21,22; ●यशायाह 6:10; यशायाह 53:4,5; यशायाह 58:8; ●यिर्मयाह 17:14; ●यहेजकेल 34:4; यहेजकेल 47:8,9; ●मत्ती 4:24; मत्ती 8:16,17; मत्ती 12:15; मत्ती 15:25-28; ●मरकुस 5:34; ●लूका 4:40; लूका 13:11-13,16; ●प्रेरितों के काम 10:38; ●रोमियों 8:11; ●1 कुरिन्थियों 6:19,20; ●इब्रानियों 11:11; ●याकूब 5:14,15; ●1 पतरस 2:24; ●प्रकाशितवाक्य 22:1,2

बीमारों को चंगा करना

● मत्ती 4:23,24; मत्ती 10:1,7,8; मत्ती 15:29-31; ● मरकुस 6:7,12,13; मरकुस 16:17,18; ● लूका 5:17; लूका 6:17-19; लूका 9:1,2,11; लूका 10:1,9; ● यूहन्ना 14:12; ●प्रेरितों के काम 10:38; ● 1 कुरिन्थियों 12:7-11; ● याकूब 5:14-16; ●1 यूहन्ना 3:8

पवित्रता (पाप पर जय पाना, शुद्धता)

● निर्गमन 15:11; निर्गमन 19:6; ● व्यवस्थाविवरण 7:6; व्यवस्थाविवरण 23:14; ● अय्यूब 31:1; ● भजन संहिता 29:2; भजन संहिता 1:1-3; भजन संहिता 4:3; भजन संहिता 15:1-5; भजन संहिता 19:12-14; भजन संहिता 24:3-5; भजन संहिता 29:2; भजन संहिता 96:9; भजन संहिता 119:9-11; ● नीतिवचन 5:15-23; नीतिवचन 6:23-25; ● सभोपदेशक 7:26; ● यशायाह 52:11; ● ओबद्याह 1:17; ● मलाकी 3:1-3; ● मत्ती 5:29,30; ● रोमियों 1:4; रोमियों 6:6,7,12-14; रोमियों 8:5-8,12,13; रोमियों 12:1,2; रोमियों 13:11-14; ● 1 कुरिन्थियों 3:16,17; 1 कुरिन्थियों 6:12,13,17-20; ● 2 कुरिन्थियों 6:14-18; 2 कुरिन्थियों 7:1; 2 कुरिन्थियों 10:3-5; ● इफिसियों 4:20-32; इफिसियों 5:1-5; ● फिलिप्पियों 2:14,15; फिलिप्पियों 4:4-8; ● 1 थिस्सलुनीकियों 4:3-7; ● 2 तीमुथियुस 2:19-22; ●तीतुस 2:11-

14; ● इब्रानियों 10:26,27; इब्रानियों 12:1-4,14-16; ● याकूब 3:8-10; याकूब 4:4-8; ● 1 पतरस 1:13-17; 1 पतरस 2:9-12; 1 पतरस 4:1,2; ● 2 पतरस 3:14,17,18; ●1 यूहन्ना 2:15-17; ● यहूदा 1:17-25

घर और परिवार

● उत्पत्ति 18:19; उत्पत्ति 22:16-18; उत्पत्ति 39:2-5; ● व्यवस्थाविवरण 28:1-12; ● यहोशू 24:14,15; ● 2 शमूएल 6:12; ● अय्यूब 5:24; ● भजन संहिता 68:5; भजन संहिता 91:10; भजन संहिता 101:1,2,7; भजन संहिता 112:1-3; भजन संहिता 118:15; भजन संहिता 127:1-5; भजन संहिता 128:1-4; भजन संहिता 144:12-15; ● नीतिवचन 3:33; नीतिवचन 12:7; नीतिवचन 14:11; नीतिवचन 15:6; ● यशायाह 32:17-19; यशायाह 65:21-23; ● यूहन्ना 14:23

पति

● उत्पत्ति 2:22-24; ● भजन संहिता 128:1-4; ● नीतिवचन 19:14; नीतिवचन 31:10-11,23,28; ● मलाकी 2:14-16; ● मत्ती 19:4-6; ● 1 कुरिन्थियों 7:3-5,10,11; 1 कुरिन्थियों 11:3; ● इफिसियों 5:23-33; ● कुलस्सियों 3:19; ● 1 तीमुथियुस 5:4; ● 1 पतरस 3:7

आनंद (दुख पर जय पाना, दुख)

● नहेम्याह 8:10; ● भजन संहिता 5:11; भजन संहिता 16:11; भजन संहिता 30:5; भजन संहिता 32:11; भजन संहिता 33:1,3,21; भजन संहिता 35:9; भजन संहिता 43:4; भजन संहिता 126:5,6; ● यशायाह 12:3; यशायाह 29:19; यशायाह 51:11; यशायाह 61:3,7; ● हबक्कूक 3:17,18; ● मत्ती 5:12; ● यूहन्ना 16:22-24; यूहन्ना 17:13; ● प्रेरितों के काम 13:52; ● रोमियों 14:17; रोमियों 15:13; ● गलातियों 5:22,23; ● फिलिप्पियों 4:4; ● कुलस्सियों 1:11;

● 1 थिस्सलुनीकियों 1:6; 1 थिस्सलुनीकियों 5:16-18; ● इब्रानियों 1:9; ● याकूब 1:2,3; ● 1 पतरस 1:8,9; 1 पतरस 4:12-14; ● 1 यूहन्ना 1:4

ज़मीन-जायदाद के मामले

● व्यवस्थाविवरण 28:8,11,12; ● भजन संहिता 16:5; भजन संहिता 37:29; भजन संहिता 125:3; ● मरकुस 10:29,30

कानूनी चुनौतियां

● व्यवस्थाविवरण 10:18; व्यवस्थाविवरण 28:7; ● भजन संहिता 3; भजन संहिता 12:5; भजन संहिता 37:6,28; भजन संहिता 72:14; भजन संहिता 89:14; भजन संहिता 103:6; भजन संहिता 119:121; भजन संहिता 140:12; भजन संहिता 146:7; ● यशायाह 28:5,6; यशायाह 54:14,17

दीर्घायु

● उत्पत्ति 6:3; ● निर्गमन 23:25,26; ● व्यवस्थाविवरण 34:7; ● अय्यूब 5:26; ● भजन संहिता 34:12-14; भजन संहिता 71:5-9,17,18; भजन संहिता 90:10-12; भजन संहिता 91:14-16; भजन संहिता 92:12-15; भजन संहिता 103:15-17; भजन संहिता 128:1,6; ● नीतिवचन 3:1-2; नीतिवचन 17:6; ● यशायाह 46:4; ● 2 कुरिन्थियों 4:16-18; 2 कुरिन्थियों 5:1-9; ● फिलिप्पियों 1:21; ● 2 तीमुथियुस 4:7,8

प्रेम

● मरकुस 12:29-31; ● यूहन्ना 13:34,35; ● रोमियों 5:5; रोमियों 12:9-21; रोमियों 13:8; ● 1 कुरिन्थियों 13:1-13; ● गलातियों 5:22,23; ● इफिसियों 4:31,32; इफिसियों 5:1,2; ● कुलस्सियों 3:12-14; ●1 थिस्सलुनीकियों 4:9,10; ● 1 तीमुथियुस 1:5; ● इब्रानियों

6:10; ●1 यूहन्ना 2:9-11; 1 यूहन्ना 3:14-18; 1 यूहन्ना 4:7-12; 1 यूहन्ना 4:16-21; ●यहूदा 1:20,21

मन(आत्मा) या बुद्धि

● 1 इतिहास 28:9; ● अय्यूब 38:36; ● भजन संहिता 26:2; भजन संहिता 19:7,14; भजन संहिता 23:3; भजन संहिता 35:9; भजन संहिता 42:5,6,11; भजन संहिता 62:1,5; भजन संहिता 94:19; भजन संहिता 103:1,2; भजन संहिता 131:2; भजन संहिता 138:3; भजन संहिता 139:2; ● यशायाह 26:3,9; यशायाह 55:7-9; ● विलाप 3:21-23; ● मत्ती 5:28; मत्ती 15:18,19; ● मरकुस 12:30; ● रोमियों 8:5-8; रोमियों 12:1,2,16; रोमियों 14:5; ● 1 कुरिन्थियों 2:16; ● 2 कुरिन्थियों 10:3-5; ● इफिसियों 4:23,24; ● फिलिप्पियों 2:3,5-8,15; फिलिप्पियों 3:12-15; ● फिलिप्पियों 4:8; ● कुलस्सियों 3:2,3; ● 1 थिस्सलुनीकियों 5:23; ● 2 तीमुथियुस 1:7; ● इब्रानियों 4:12; इब्रानियों 8:10; ●1 पतरस 2:11; 1 पतरस 4:1; ● याकूब 1:21; ● 3 यूहन्ना 2

शांति (डर, चिंता पर जय पाना)

● न्यायियों 6:23,24; ● भजन संहिता 4:8; भजन संहिता 37:11,37; भजन संहिता 119:165; ● यशायाह 9:6,7; यशायाह 26:3,12; यशायाह 32:17,18; यशायाह 48:17,18; यशायाह 53:5; यशायाह 54:10,13; यशायाह 55:12; ● मत्ती 5:9; ● यूहन्ना 14:27; यूहन्ना 16:33; ● रोमियों 5:1; रोमियों 8:6; रोमियों 12:18; रोमियों 14:17-19; रोमियों 15:13,33; रोमियों 16:20; ● 1 कुरिन्थियों 1:3; 1 कुरिन्थियों 14:33; ● 2 कुरिन्थियों 13:11; ● गलातियों 5:22,23; ● फिलिप्पियों 4:6-9; ● 2 थिस्सलुनीकियों 3:16; ● इब्रानियों 12:14

पदोन्नति

● व्यवस्थाविवरण 28:13; ● अय्यूब 8:6,7; ● भजन संहिता 37:4,5; भजन संहिता 75:6,7; ● नीतिवचन 16:3; ● नीतिवचन 22:4,29; ● यशायाह 1:19; ● यशायाह 48:17; यशायाह 54:1-3; यशायाह 60:22; ● यूहन्ना 15:5; ● 1 तीमुथियुस 6:17

समृद्धि और सफलता

● उत्पत्ति 26:12; उत्पत्ति 39:2,3,23; ● व्यवस्थाविवरण 29:9; व्यवस्थाविवरण 30:5; ● यहोशू 1:7,8; ● 1 राजा 2:3; ● 2 इतिहास 20:20; 2 इतिहास 26:5; 2 इतिहास 31:21; ● नहेम्याह 2:20; ● अय्यूब 8:6,7; अय्यूब 36:10,11; ● भजन संहिता 1:1-3; भजन संहिता 25:12,13; भजन संहिता 35:27; भजन संहिता 118:25; ● नीतिवचन 28:25; ● जकर्याह 8:12; ● 3 यूहन्ना 1:2

(**यह भी देखें**ःआशीर्वाद और धन्य हो रहा है)

सुरक्षा

● भजन संहिता 3:3-6; भजन संहिता 27:1-5; भजन संहिता 32:7; भजन संहिता 34:4,7,17,19; भजन संहिता 50:15; भजन संहिता 91:10-12; भजन संहिता 121:1-8; ● नीतिवचन 19:23; नीतिवचन 21:31; ● यशायाह 54:14,15,17; यशायाह 59:19

प्रावधान

● उत्पत्ति 22:13,14; ● भजन संहिता 23:1-6; भजन संहिता 34:9,10; भजन संहिता 37:25; भजन संहिता 84:11; ● मत्ती 6:31-33; ● 2 कुरिन्थियों 9:6-8; ● फिलिप्पियों 4:19।

शांति

● भजन संहिता 131:2; ● यशायाह 30:15; यशायाह 32:17,18;

• विलाप 3:26; • सपन्याह 3:17; • 1 थिस्सलुनीकियों 4:11; • 2 थिस्सलुनीकियों 3:11,12; • 1 पतरस 3:3,4

मृतों को जीवित करना

• 1 राजा 17:17-24; • 2 राजा 4:32-37; 2 राजा 13:20,21; • मत्ती 10:7,8; मत्ती 11:4,5; • मरकुस 5:35-43; • लूका 7:11-17; •यूहन्ना 11:38-45; • प्रेरितों के काम 9:36-42; प्रेरितों के काम 14:19,20; प्रेरितों के काम 20:9,10; प्रेरितों के काम 26:8; • रोमियों 4:17; • इब्रानियों 11:35

नींद

• भजन संहिता 4:8; भजन संहिता 16:7; भजन संहिता 127:2; • नीतिवचन 3:24; नीतिवचन 6:22,23

आत्मा से परिपूर्ण होना और आत्मा के चलाए चलना

• मत्ती 4:1; • यूहन्ना 16:13-15; • प्रेरितों के काम 5:32; प्रेरितों के काम 8:29; प्रेरितों के काम 10:19,20; प्रेरितों के काम 13:2,3; प्रेरितों के काम 15:28,29; प्ररितों के काम 16:6-10; प्रेरितों के काम 18:5; प्रेरितों के काम 19:21; प्रेरितों के काम 20:22,23; प्रेरितों के काम 21:4,10,11; • रोमियों 8:1,2,13-17; • 2 कुरिन्थियों 13:14; • गलातियों 5:16-26; • इफिसियों 4:30; इफिसियों 5:17-21; • 1 थिस्सलुनीकियों 5:19

बल

• निर्गमन 15:2; • व्यवस्थाविवरण 33:25; • 1 शमूएल 30:6; • 2 शमूएल 22:33; • भजन संहिता 27:1,14; भजन संहिता 31:24; भजन संहिता 46:1-3; भजन संहिता 73:26; • यशायाह 11:2; यशायाह 28:5,6; यशायाह 40:28-31; यशायाह

41:10; ● 2 कुरिन्थियों 12:9; ● इफिसियों 3:16; इफिसियों 6:10; ● फिलिप्पियों 4:13; ● कुलस्सियों 1:11

पत्नी

●नीतिवचन 12:4; नीतिवचन 14:1; नीतिवचन 31:10-31; ● 1 कुरिन्थियों 7:2-4,10,11; ● इफिसियों 5:22-24,33; ● कुलस्सियों 3:18; ● तीतुस 2:1-5; ● 1 पतरस 3:1-6

बुद्धि और समझ

● उत्पत्ति 41:38,39; ● निर्गमन 31:1-5; निर्गमन 35:30-35; निर्गमन 36:1; ● 1 इतिहास 28:11,12,19; ● 1 राजा 4:29; ● अय्यूब 12:13; अय्यूब 28:20,28; अय्यूब 32:8; ● भजन संहिता 18:28; भजन संहिता 25:14; भजन संहिता 51:6; भजन संहिता 111:10; भजन संहिता 112:5; भजन संहिता 119:97-99,130; ● नीतिवचन 2:6; नीतिवचन 3:32; नीतिवचन 4:5-9; नीतिवचन 8:11-21; नीतिवचन 20:27; ● यशायाह 11:1,2; यशायाह 28:23-29; यशायाह 29:24; यशायाह 40:28; ● यिर्मयाह 51:15; ● दानिय्येल 1:17; दानिय्येल 2:20-22,28; दानिय्येल 5:12-14; ● लूका 24:45; ● 1 कुरिन्थियों 2:9-12; ● याकूब 1:5

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सब ने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

***परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"* (रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मरा। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग में चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

***"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"* (प्रेरितों के काम 10:43)।**

***"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा "* (रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड

चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मर कर और फिर मरे हुओं में से जी उठ कर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं अपने पापों की क्षमा और अपने पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार फैलाने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और पवित्र आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत शृंखला का समाधान करती है।

- **किशोरों**
- **व्यक्तिगत समायोजन**
- **सम्बंधपरक चुनौतियां**
- **शिक्षा में कम सफलता पाने वाले**
- **कार्य सम्बंधित मुद्दे**
- **परिवार / दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं**
- **माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
- **व्यवहार सम्बंधी विकार**
- **व्यक्तित्व विकार**
- **मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
- **तनाव / आघात**
- **शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
- **आध्यात्मिक मुद्दे**
- **जिंदगी की सीख**

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में बिना मूल्य के वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और पवित्र आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग करके आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

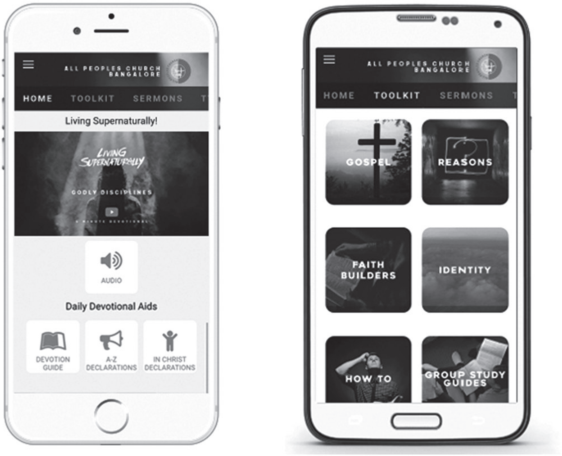

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने वचन के द्वारा कार्य करता है। इस प्रकार उसने सबकुछ बनाया है–अपनी सामर्थ के द्वारा जो उसके वचन से लागू हुआ। परमेश्वर का वचन जीवन और सामर्थ का वाहक है जो हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर सकता है। परमेश्वर ने हमें उसका वचन दिया है और अपने वचन की सामर्थ के द्वारा हममें कार्य करना चाहता है। उसने हम पर यह भी प्रकट किया है कि उसके वचन की सामर्थ को कैसे पाया जाए, ताकि उसके वचन में निहित जीवन और सामर्थ हम में जारी हो सके जिससे उसका अलौकि कार्य हममें होता रहे। जबकि यह सच है कि परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा के द्वारा दिव्य चिन्ह और चमत्कारों से अपने कार्यों को प्रदर्शित करता है, किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि परमेश्वर भी अपने वचन के द्वारा ही कार्य करता है। कई विश्वासी उन अलौकिक कार्यों से चूक जाते हैं जो परमेश्वर उनके जीवन में अपने वचन के द्वारा जारी करना चाहता है, क्योंकि वे दिव्य की तलाश में रहते हैं। यह पुस्तक हमारे लिए सरल सच्चाइयों का खुलासा करती है जो परमेश्वर की उस अलौकिक शक्ति को प्राप्त करने और अनुभव करने में हमारी सहायता करेगी जो उसके वचन, चमत्कारी बीज के माध्यम से हम में लागू होता है।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org